



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुख्यपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 5 • 8 - 14 नवंबर, 2021



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 06-11-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

अर्हत उवाच

अणुसासनमेव
पवकमे।

तू अनुशासन का
अनुसरण कर।

जैन भगवती दीक्षा समारोह

स्वेच्छा से सर्वस्व का त्याग साधु की सबसे बड़ी संपत्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २७ अक्टूबर, २०२१

दीक्षा प्रदाता, तेरापंथ के अधिमान्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि भारत में, दुनिया में अनेक-अनेक ऋषि-महर्षि, संत पुरुष हुए हैं। उनमें से कईयों ने तो आत्म-साक्षात्कार, केवलज्ञान भी प्राप्त कर लिया, आध्यात्मिक साधना के द्वारा उन्होंने परम को प्राप्त किया था।

जो साक्षात्-दृष्ट्या ऋषि होते हैं, सर्वज्ञ होते हैं, उनकी जो वाणी प्रस्फूटित होती है, उसमें बहुत सार हो सकता है। ऐसी आर्षवाणी में जो शास्त्र बनते हैं, उनका भी अपना महत्व होता है।

शास्त्र की ही वाणी है कि त्यागी वह होता है जो स्वाधीनतापूर्वक, स्व-वशता में भोगों का त्याग कर देता है। एक आदमी विवशता में सांसारिक सुख नहीं भोग सकता, वह कोई त्यागी पुरुष नहीं है। साधु के वेश में सब त्यागी बन जाएँ, यह अत्याशा है, मुश्किल है।

हम सभी त्यागी हैं, जिन्होंने घर को छोड़ दिया है। साधना के मार्ग पर आगे बढ़ गए हैं। सारे कोई महाव्रती साधु न भी बन सकें तो गृहस्थ जीवन में अपुव्रती बनो। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम हैं। इनसे गृहस्थ सद्गृहस्थ बनकर अच्छा जीवन जी सकता है। गृहस्थ आदमी राजनीति के क्षेत्र में व सामाजिक क्षेत्र में भी काम कर सकता है। विभिन्न रूपों में अपनी सेवा दे सकता है। वह किसी भी क्षेत्र में रहे, नैतिकता उसके साथ रहे। अहिंसा, नशामुक्ति उसके साथ रहे।

दीक्षा समारोह पर आचार्यप्रवर ने



फरमाया कि भारतीय संस्कृति में संन्यास की दीक्षा की प्रथा, परंपरा भी है। हमारे अनेक साधु-साधिवाँ जो बालावस्था में या बड़ी उम्र में साधु-साधी बने और संयम पथ पर आए हैं। घर-परिवार संपत्ति को छोड़ देना बड़ा त्याग है। यह एक प्रसंग से समझाया।

यह दीक्षा छोटे परिवार को छोड़कर मानो बड़े परिवार में आने का प्रयास है। इनके माता-पिता स्वीकृति दे देते हैं, वो भी बड़ी बात है। भारतीय ऋषि परंपरा में यह दीक्षा की परंपरा आज भी जीवित है। जैन धर्म में दीक्षा लेना तो बड़ी बात होती है। पाँच महाव्रत ग्रहणीय होते हैं।

सर्व हिंसा, झूठ, चोरी का जीवन भर त्याग।

जीवन भर ब्रह्मचर्य की साधना करना व किसी तरह का परिग्रह नहीं रखना।

करते हुए नया नाम साधी रोहिणीप्रभा प्रदान करवाया।

जैन साधु पद-आत्रा करता है। रात्रि भोजन नहीं करता है। रात में पानी नहीं पीना। साधु भिक्षाजीवी होता है। गोचरी करता है। साधु के पास न रुपया-पैसा, न जमीन-आश्रम। त्याग ही हमारी संपत्ति है। ये संपत्ति गृहस्थ के पास नहीं। साधु अकिञ्चन होता है।

दीक्षा संस्कार प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने आर्षवाणी का स्मरण किया। जैन शासन, उसके अंतर्गत भैक्षव शासन के दीक्षा समारोह का प्रसंग। पूज्यप्रवर ने दीक्षार्थी के माता-पिता से मौखिक आज्ञा ली। दीक्षार्थी बहन से भी दीक्षा की सहमति ली।

नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से दीक्षार्थी को सर्वसावध प्रवृत्ति का तीन करण-तीन योग से यावज्जीवन के लिए त्याग करवाया। नवदीक्षित साधी ने पूज्यप्रवर को वंदना की। पूज्यप्रवर ने शास्त्र वाणी से अतीत की आलोचना करवाई। नवदीक्षित का केश लोचन का संस्कार साधीप्रमुखाश्री जी ने किया। साधी प्रमुखाश्री जी ने नव दीक्षित साधी को पूज्यप्रवर की मंगल आर्षवाणी के साथ रजोहरण प्रदान करवाया। पूज्यप्रवर ने नव दीक्षित साधी का नामकरण संस्कार

संभवतः कुछ प्रवचनों पर आधारित यह ग्रंथ है—भगवान ने कहा। उठो शिष्य पुस्तक जो परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ जी की एक किताब है—संबोधि। उस पर भी मैंने अनेक-अनेक प्रवचन किए हैं। संभवतः उन्हीं प्रवचनों में से कुछ प्रवचनों पर आधारित है, यह पुस्तक—उठो शिष्य। भगवान महावीर ने मुनि मेघकुमार को मानो उठने का प्रतिबोध दिया था।

ये दो पुस्तकें आई हैं। जैविभा जो ज्ञान के प्रसार में अपना योगदान दे रही है। जैविभा भी खूब आध्यात्मिक सेवा करती रहे। ये पुस्तकें पाठक को आध्यात्मिक प्रेरणा देने में निमित्त बने ऐसी मंगलकामना।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि आचार्य जीत व्यवहार के आधार पर मर्यादाओं में परिवर्तन कर सकते हैं। वर्तमान में समीक्षा परिषद में चिंतन कर आचार्य निर्णय करते हैं। आचार्य व्यवहार के ज्ञाता होते हैं, इसलिए प्रायश्चित्त के दाता होते हैं।

सैयद शाहनवाज हुसैन जो जैविभा के राष्ट्रीय प्रवक्ता हैं, ने अपनी भावना श्रीचरणों में व्यक्त की। व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रकाश सुतारिया ने मुमुक्षु प्रेक्षा एवं समागम अतिथियों का स्वागत किया।

दीक्षार्थी मुमुक्षु प्रेक्षा का परिचय मुमुक्षु राजुल से दिया। मुमुक्षु प्रेक्षा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पारिवारिक जनों ने दीक्षार्थी को दीक्षा की आज्ञा प्रदान की। आज्ञा पत्र का वाचन बजरंग जैन ने किया।

(शेष पृष्ठ २ पर)





वित्त अर्जन में वृत्त अच्छा होना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण



भीलवाड़ा, ३१ अक्टूबर, २०२१

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि दो शब्द हैं—वित्त और वृत्त। दोनों शब्दों में काफी साम्य है। ई कार और रिकार का अंतर है। वित्त यानी पैसा—धन—अर्थ। वृत्त यानी चारित्र आचरण। इन दोनों में ज्यादा दूरी न हो।

जो अपरिग्रही साधु है, जिन्होंने पैसे को त्याग दिया। हम साधुओं में पाँच नियमों का पालन करणीय होता है। ये पाँच महाव्रत कहलाते हैं। इनमें पाँचवाँ महाव्रत है—सर्व परिग्रह विरमण। साधु परिग्रह का त्यागी हो यह विधान है। साधु के स्वामित्व में किसी भी तरह का परिग्रह न हो।

जो गृहस्थ जीवन जीने वाले हैं, उनको परिग्रह भी रखना होता है। अर्थ—पैसा भी कमाना, प्राप्त करना होता है। वित्त गृहस्थ को चाहिए जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए। पैसे से गृहस्थ के काम होते हैं।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने बताया था कि दो शब्द हैं—अर्थ और अर्थाभास। अर्थ यानी न्याय-नीति से अर्जित किया गया पैसा। अन्यथा अनीति से जो पैसा

प्राप्त किया जाता है, वह अर्थाभास है। गृहस्थ जीवन में अर्थ रखना कोई निंदनीय कार्य नहीं है, पर पैसे के साथ आर्थिक शुचिता या अशुद्धि न आए।

पैसे की तीन स्थितियाँ हैं—अर्जन, संरक्षण और उपभोग। अर्जन में शुचिता के लिए ईमानदारी आवश्यक है। अर्जन में झूट और चोरी से बचा जाता है, तो अर्थ में शुद्धता है। संरक्षण के साथ अनासक्ति जोड़ दें। अर्थ में ज्यादा मोह न हो। अनासक्ति है, तो तनाव कम रहेगा, चेतना-आत्मा शुद्ध रह सकेगी। उपभोग में संयम हो। श्रावक के बारह व्रतों में पाँचवाँ व्रत है—इच्छा परिमाण और सतत्याँ हैं—भोगोपभोग परिमाण।

इच्छाओं की सीमा हो। संग्रह ज्यादा मत करो और मोह भी ज्यादा मत रखो। व्यक्तिगत जीवन में उपभोग का संयम हो। सादरीपूर्ण जीवन रहे। तीन चीजें ईमानदारी, अनासक्ति और संयम अर्थ के साथ जुड़ी रहे तो अर्थ अर्थ रह सकेगा, अर्थाभास नहीं हो सकेगा।

व्यापार, व्यवसाय, उद्योग जनता की सेवा के लिए है। सेवा दूँ और पैसा लूँ ताकि मेरे परिवार का भी भरण-पोषण अच्छी तरह हो सके। व्यापारी, उद्योगपति

**स्वेच्छा से सर्वस्व का त्याग साधु की सबसे...
(प्रथम पृष्ठ का शेष)**

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने शिक्षा-प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आज आचार्यप्रवर की सन्निधि में प्रतिदिन आध्यात्मिक उपक्रम होते रहते हैं, पर दीक्षा का कार्यक्रम अपने आपमें अधिक महत्त्वपूर्ण है। दीक्षित होने वाले के लिए भी महत्त्वपूर्ण है, तो दीक्षा का कार्यक्रम देखने वालों के मन में भी उत्सुकता होती है। किसी-किसी के मन में सत्य का साक्षात्कार करने की भावना जागृत होती है। दीक्षा का मार्ग कष्टपूर्ण है पर अंतिम परिणाम सुखद होती है, जब ममत्व का धागा टूट जाता है, तो दीक्षा की भावना जागृत होती है।

शाहनवाज हुसैन का आना हुआ है, राजनीति से जुड़े हुए हैं। राजनीति भी एक सेवा का कार्य होता है। सेवा में निर्मलता रह सकती है। हुसैनजी आध्यात्मिक-धार्मिक दृष्टि से भी आगे बढ़ते रहें और भी लोग हैं, सभी अपने-अपने क्षेत्रों में नैतिक मूल्यों को बनाए रखने का व जहाँ भी अपना सर्कल है वहाँ नैतिकता को पुष्ट बनाए रखने का प्रयास करते रहें।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया तथा समझाया कि साधुत्व आत्मोदय के लिए होता है।

यह सोचे कि कहीं ऐसा न हो जाए कि सेवा से ऊपर पैसा चला जाए। वित्त के साथ वृत्त-चरित्र अच्छा रहे।

व्यापारी जनता के विश्वास पात्र बने रहें। सेवा में ईमानदारी रहे तो सेवा निर्मल रह सकती है। पूज्यप्रवर ने दीपावली पर तेले करने की प्रेरणा दी।

मेवाड़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स का सम्मेलन हो रहा है। राजस्थान हाईकोर्ट के न्यायाधीश मनोज कुमार गर्ग भी पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर ने जिज्ञासाओं का समाधान दिया। व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत-अभिनंदन किया।

न्यायाधीश मनोज कुमार जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि लोकतंत्र हो या राजतंत्र न्यायपालिका का बड़ा महत्त्व है। न्यायपालिका अपराधों को रोकने में सिद्ध हो सकती है। राजा का कर्तव्य है—सज्जनों की रक्षा करना, दुर्जनों पर अनुशासन व प्रजा का भरण-पोषण करना। न्यायाधीश न्याय के आसन पर बैठने वाले विशिष्ट व्यक्ति होते हैं। प्रलोभन-भय न्याय में बाधक बनते हैं। ये दोनों न्याय पर हावी न हो। निष्पक्षता का प्रयास हो।

मेवाड़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स के पूर्व चेयरमैन श्याम बोरा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। चेम्बर ऑफ कॉमर्स के मंत्री आर०को० जैन ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। अभिनव चोरड़िया ने गीत की प्रस्तुति दी। व्यवस्था समिति द्वारा आगंतुक मेहमानों का सम्मान किया।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कहा कि चक्षुष्मान कौन होता है और कितने के प्रकार के प्रकार के होते हैं। तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं—एक चक्षु, दो चक्षु और तीन चक्षु वाले। छद्मस्थ मनुष्य एक चक्षु वाला होता है। देवों के दो चक्षु माने गए हैं। जन्म चक्षु और अवधिज्ञान का चक्षु। तथा रूप श्रमण महान जो उत्पन्न ज्ञान, दर्शन के धारक होते हैं, वे त्रिचक्षु होते हैं।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि तेरापंथ में विनय और वात्सल्य की जो परंपरा है, इसके कारण इसका हर सदस्य प्रसन्नता की अनुभूति करता है। शांति की अनुभूति करता है। विनय से व्यक्ति अपना विकास करता है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि ईमानदारी की संपत्ति प्रत्येक व्यक्ति के लिए जरूरी है।

व्यक्ति का चिंतन जीवन की दिशा तय करता है : आचार्यश्री महाश्रमण



भीलवाड़ा, २८ अक्टूबर, २०२१

वर्तमान भिक्षु परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी आज महाश्रमण सभागार से भिक्षु विहार पधारे। अमृत देशना प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमारे पास प्रवृत्ति के तीन साधन हैं—शरीर, वाणी और मन। हम शरीर के द्वारा चलाना-फिरना आदि प्रवृत्तियाँ करते हैं। वाणी के द्वारा बोलते हैं और मन के द्वारा हम चिंतन करते हैं। अतीत की स्मृति और भविष्य के संदर्भ में कल्पना भी कर सकते हैं।

ये तीन हमारी चेतना के मानों कर्मकर हैं। आदमी वचन से ज्यादा मन को प्रवृत्ति करने में काम लेता है। हमारा मन तो नींद में भी सक्रिय रहता है। चिंतन के द्वारा आदमी पाप कर्म का बंधन भी कर सकता है तो चिंतन करते हैं। चिंतन को प्रवृत्ति के संदर्भ में कर सकता है। चिंतन आदमी का प्रशस्त होना चाहिए।

ये तीन हमारी चेतना के मानों कर्मकर हैं। आदमी वचन से ज्यादा मन को प्रवृत्ति करने में काम लेता है। हमारा मन तो नींद में भी सक्रिय रहता है। चिंतन से आदमी दुःखी से सुखी बन सकता है। चिंता नहीं चिंतन करो। व्यथा नहीं व्यवस्था करो। प्रशस्ति क्या प्रस्तुति करो। ऐसे चिंतन से हमारा जीवन अच्छा बन सकता है।

मैं भिक्षु विहार जो आचार्य भिक्षु सेवा संस्थान का उपक्रम है, उसमें बैठा हूँ। जिन्हें भिक्षु में भी साधुओं के ठिकाने को भिक्षु विहार भी कहते हैं। भिक्षु के दो अर्थ हो जाते हैं। एक तो भिक्षु यानी साधु। दूसरा भिक्षु स्वामी के नाम से भिक्षु विहार। भिक्षु स्वामी का नाम स्मरण में आ सकता है। भिक्षु स्वामी का नाम समरण में आ सकता है, कितने उनके नाम से गीत हैं। जैसे तीर्थकरों में भगवान पार्श्व के हैं, उतने और तीर्थकरों के बहुत कम हैं।

परमपूज्य भिक्षु स्वामी का हम नाम स्मरण करते हुए, उनसे हमें प्रेरणा मिलती रहे। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि हम मन से चिंतन प्रशस्त करें, ताकि हमारा जीवन अच्छा रहे।

◆ सत्य और संग्रहाय में किसी एक का चयन करना हो तो सत्य को स्वीकार करना चाहिए, भले उसके लिए संग्रहाय को छोड़ना क्यों न पड़े।

— आचार्यश्री महाश्रमण



सत्य की खोज के लिए अनाग्रह की चेतना अपेक्षित : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २६ अक्टूबर, २०२१

युगप्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि ज्ञान जगत में अनेक विचारधाराएँ, सिद्धांत धाराएँ हैं। दार्शनिक जगत में अनेक दर्शन हैं, फिलोसोफिज़ हैं। उनके सिद्धांतों में भी अंतर है। नास्तिक दर्शन भी है। आस्तिक दर्शन भी है।

सूयगड़ो आगम में अन्य विचारों-मान्यताओं का भी उल्लेख किया गया है। एक सिद्धांत जो अन्य दार्शनिकों का है कि कुछ दार्शनिक भूतवादी है। उनके मत में ऐसा निरूपित किया गया है कि इस जगत में पाँच महाभूत होते हैं। भूत यानी तत्त्व। भूत से भौतिक शब्द बना है। अध्यात्म से विपरीत चीजें भौतिक होती हैं।

पाँच महाभूत में पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और आकाश हैं। जैन दर्शन में छः काय के जीव हैं। पृथ्वीकाय, अपकाय, तेजसकाय, वायुकाय, ये चार काय चार महाभूत से जुड़े हैं। एक आकाश है, जो छः द्रव्यों में आकाशस्तिकाय भी आता है। ये पाँच तत्त्व हैं, इनके संयोग से एक आत्मा उत्पन्न होती है। इन पाँच महाभूतों का विनाश होने पर उस आत्मा का भी विनाश हो जाता है।

ये स्वतंत्र आत्मा जैसी चीज को नहीं मानते हैं। ये शरीर भी इन पाँच भौतिक तत्त्वों का संयोग है। शरीर में जो कठोर भाग है, वह पृथ्वी भूत है। जैसे हड्डियाँ हैं। शरीर में जो द्रव भाग है, वह पानी भूत है। शरीर में जो उष्मा है, वह अग्निभूत है। शरीर में जो चलस्वभाव उच्छ्वास-निःश्वास होता है, वह वायु तत्त्व है। शरीर में जो पोताभाग है, वह आकाश भाग होता है।

इन पाँच महाभूतों से एक तत्त्व पैदा होता है, जिसे आत्मा-चैतन्य कह सकते हैं। भूतवादियों के अनुसार चेतन हो या



अचेतन ये सारे द्रव्य भौतिक ही होते हैं। इस विचारधारा से पाँच भूत जो ये शरीर में संयुक्त हुए हैं, उनसे चैतन्य पैदा हुआ है। इन पाँच तत्त्वों में से एक भी भूत की कमी हो जाए या दो से अधिक की कमी हो जाए तो प्राणी को मृत घोषित कर दिया जाता है। ये सारा इन पाँच महाभूतों का खेल है, ऐसा इनका चिंतन है।

एक तत्त्व की जो कमी हो जाने से जीव मृत हो जाता है, तो पाँचों तत्त्व पाँचों तत्त्वों में मिल जाते हैं। इस तरह सारा विश्वास हो जाता है। ये भूतवादी आत्मा का स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकार नहीं करते हैं। ये दर्शन में चार्वाक दर्शन की भी बात आती है। चार्वाक दर्शन में चार भूत बताए गए हैं—पृथ्वी, पानी, अग्नि और वायु। वहाँ आकाश नहीं बताया गया है, क्योंकि वो प्रत्यक्ष प्रमाण को ही मानते हैं। कारण आकाश अमूर्त है।

बहुत काव्यायन पाँच भूतों को स्वीकार करने वाले थे। वे आत्मा को नहीं

मानते थे। भूतों से चैतन्य उत्पन्न होता है और भूतों के विनाश से चैतन्य का विनाश हो जाता है, ये अनात्मवादियों का सिद्धांत है। शरीर से भिन्न कोई आत्मा नहीं है। आत्मा भिन्न नहीं है, तो न परलोक में जाने की बात है, न पुण्य-पाप का फल बाद में भोगने की बात है, न पुनर्जन्म की बात है। इसलिए वे लोग धर्माचरण को भी महत्त्व नहीं देते।

जिस बात पर संदेह है, उस पर ध्यान मत दो, जो सामने है, उस पर ध्यान दो। जैसे एक सिक्का सोने का है या पीतल का यह संदेहात्मक है। दूसरा सिक्का शुद्ध चाँदी का है, तो ये कहते हैं, कि जो शुद्ध है, वो ही लो। ये लोग परलोक को संदेहात्मक सिक्के की तरह मानते हैं। वर्तमान को देखो, भविष्य की चिंता मत करो। ऐसी ये बातें नास्तिक संदर्भ में हैं। एक विचारधारा है, अलग-अलग मान्यताएँ को सकती हैं।

जैन धर्म-जैन दर्शन की बातें तो

आगमों में है ही पर दूसरे दर्शन की बातें भी आगम में बताई गई हैं। इससे दूसरे के सिद्धांत की भी जानकारी मिल जाती है। दूसरे के सिद्धांत को जान लेने के बाद इसमें हमारा क्या निष्कर्ष है, वो भी सामने आ जाए तो और ज्यादा स्पष्टता हो सकती है।

मत की भिन्नता हो सकती है, पर खोज एक ऐसा तत्त्व है, जो कुछ

करते-करते आज यहाँ पहुँचे हैं, आगे पता नहीं और क्या मिल जाएगा। अध्यात्म जगत में भी एक यथार्थ की प्राप्ति का क्रम बनता है। यथार्थ की प्राप्ति एक इंद्रियों के द्वारा करने का प्रयास हो, उसका भी अपना महत्त्व है। अर्तान्द्रिय ज्ञान तो है, नहीं। हमारे पास ज्ञान की साधना या तो इंद्रियों हैं या मन है। हमारा ज्ञान सीमित है।

आदमी अनाग्रही हो। आग्रही न हो। दुराग्रह नहीं होना चाहिए और कोई नई बात मिले, उस पर भी ध्यान दें। आग्रह

से यथार्थ की प्राप्ति में बाधा आ सकती है। दुराग्रह करेंगे तो सच्चाई का देवता हमें दर्शन कर्यों देगा।

मैंने मान लिया वह सत्य है या केवली ने जाना वो सत्य है। यथार्थ का हमें साक्षात्कार करना है। अवांछनीय दुराग्रह नहीं करना। खोज करनी है, तो अनाग्रह में रहो। जो सच्चाईयाँ मिलें, उन्हें देखने, जानने, समझने का प्रयास करो। सामने वाले की बात भी सुनो। दिमाग के द्वारा खुले रखो तो सत्य का देवता भीतर प्रवेश कर सकेगा। अनाग्रह की चेतना रखनी चाहिए, सत्य की खोज की दृष्टि से यह अपेक्षित लगता है।

समणी कमलप्रज्ञा जी, समणी करुणप्रज्ञा जी, समणी सुमनप्रज्ञा जी बड़े अंतराल के बाद आज श्रीचरणों में उपस्थित हुई। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि कठिनाइयाँ आ सकती हैं, समता का भाव रहे, हमारी सूझ-बूझ भी काम करती रहे। तीनों समणियाँ खूब अच्छा काम करें। साधना, सेवा का विकास हो।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। मुनि रत्नेश जी ने पूज्यप्रवर से अठाई के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। इनकी संसारपक्षीय माँ ममता प्रकाश बुरड़ ने भी अठाई की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

पूज्यप्रवर की सन्निधि में टीपीएफ द्वारा इंजीनियर्स सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। परम पावन ने मंगल पाठेय प्रदान करवाया।

मुख्य नियोजिका जी ने शल्यों की विवेचना करते हुए कहा कि निदान शल्य में जीव अनेक प्रकार के निदान कर सकता है। शल्य से जीव चारों गति में भ्रमण करता रहता है।

समणी कमलप्रज्ञा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

त्याग की मूल कसौटी है भीतर से त्याग करना : आचार्यश्री महाश्रमण



भीलवाड़ा, २४ अक्टूबर, २०२१

अनुकंपा के सागर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि सुयगड़ो आगम में कहा गया है कि हमारी दुनिया में साधु भी होते हैं और असाधु भी होते हैं। दुनिया के लिए मानो एक अच्छी बात है कि हर समय दुनिया में साधु रहते हैं। दुनिया में कुछ व्यक्ति ऐसे भी हो सकते हैं, त्याग तो किया है, पर वो सम्यक् रूप में आत्मा में त्याग नहीं आया।

ऐसे व्यक्ति बाह्य रूप में तो त्यागी हुए पर काम भोगों में आसक्त रहने वाले हो सकते हैं। पदार्थों का ऊपर से त्याग करना भी अच्छी बात हो सकती है। पर भीतर से छूट जाए तब पूर्ण बात हो सकती है। ऊपर से छोड़ दिया पर भीतर में आसक्ति है, तो बंधन हो जाता है।

भीतर से त्याग है, तो वह त्यागी हो गया। बाहर से कैसे नहीं होता? जैसे एक आदमी गृहस्थ के कपड़े पहने हुए हैं और उसी वेश में साधुपन पचक्खा दिया, ऊपर से तो नहीं पर भीतर से त्याग हो गया। तो उसमें साधुत्व तो आ गया।

मैंने बीदासर में २०१४ में एक साथ ४३ व्यक्तियों को मुनि दीक्षा प्रदान की थी। उनमें प्रायः तो साधु वेशधारण किए हुए थे, पर कुछ गृहस्थ वेश में या समणी वेश में थी। उस समय तीन प्रकार की वेशभूषा में व्यक्ति थे। तो कुछ का बाह्य रूप से तो त्याग नहीं था, पर भीतर से त्याग हो गया था। ऊपर का त्याग न भी हो, कल्याण तो हो सकता है।

मरुदेवा माता को गृहस्थ वेश में साधी भाव ही नहीं सिद्ध भाव से प्राप्त हो गई। भीतर से त्याग हो जाए तो कल्याण हो सकता है। बाहर से त्याग हो, पर भीतर से त्याग नहीं तो कल्याण नहीं हो सकता। त्याग की मूल कसौटी है कि भीतर से छूटे। व्यवहार में बाहर से छोड़ना भी उचित हो सकता है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)



रंग उल्लास का : दो दिवसीय शिविर

विजयनगर, बैंगलुरु।

तेममं के तत्त्वावधान में साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में स्थानीय कन्या मंडल के लिए दो दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने कहा कि जीवन में यदि उल्लास हो, उत्साह हो, उमंग हो, उम्मीद हो, आशा हो, विश्वास हो, तो व्यक्ति निश्चित ही सफलता का वरण कर सकता है। कन्याओं को भी अपने जीवन में श्री, हीं धीं, धृति शक्ति और शांति संपन्न बनना है, जिससे वह जीवन के प्रत्येक पल में आंतरिक आनंद व उल्लास का अनुभव कर सके।

स्वयं से स्वयं की पहचान सेशन के अंतर्गत प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका रेखा पितलिया एवं अभिलाषा डांगी ने प्रेक्षाध्यान एवं आत्मविश्वास को जागृत करने के टिप्प बताए। साध्वी विज्ञप्रभा जी ने प्रसन्नता के संदर्भ में कन्याओं को विस्तार से समझाते हुए जीवन में प्रत्येक पल को मुस्कुराकर व्यतीत करने की प्रेरणा दी। रंगों की दुनिया में रंगों का विकास करने के सम्बन्ध प्रयोग से शारीरिक और मानसिक चिकित्सा की जा सकती है, इसका प्रशिक्षण दिया कलर थेरेपिस्ट पूनम दुगड़ ने। जैन भूगोल से परिचय करवाने के लिए साध्वी आस्थाश्री जी ने कन्याओं के साथ लोक की चर्चा की। Drive ahead station के अंतर्गत मयूख वैद्य कन्याओं को कई ऐसे ऑप्शन से अवगत कराया, जिसको अपना कैरियर बनाकर कन्याएँ अपने जीवन में प्रोफेशनली सक्सेसफुल बन सकती हैं। कलात्मक विकास के लिए ऋजुता डोसी ने कन्याओं को नाईफ पेटिंग की कला सिखाई।

इस सबके साथ-साथ कन्याओं ने ज्ञानात्मक और कलात्मक विकास के लिए

श्री महिला मंडल के विविध आयोजन

treasure hunt game, २५ बोल पर आधारित विज प्रतियोगिता, मास्क डेकोरेशन प्रतियोगिता, वर्तमान युग में धर्म की उपयोगिता, विषय पर ग्रुप डिस्कशन आदि अनेक एक्टिविटी भी करवाई गई। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने लौकिक दान, लोकोत्तर दान, भाव पूजा, द्रव्य पूजा, आदि विषयों पर जानकारी देते हुए कन्याओं के सैद्धांतिक ज्ञान को पुष्ट किया।

शिविर के अंत में सभी कन्याओं से फीडबैक लिया गया और विभिन्न प्रतियोगिताओं की विजेता कन्याओं को महिला मंडल द्वारा पुरस्कृत किया गया।

शपथ ग्रहण समारोह

पल्लावरम।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा भवन, साहुकारपेट में तेरापंथ महिला मंडल का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि ममता, हिम्मत और लज्जा व लगन के त्रिवेणी प्रवाह का नाम है—महिला। महिला सुखद समाज संरचना का कारक तत्त्व है। कर्मजा शक्ति के प्रवाह का प्राण तत्त्व है। समाज का सुधङ्ग व्यक्तित्व है, कर्मठता का कर्तृत्व है और नए आयाम का नया नेतृत्व है—महिला। नई सोच को अंजाम देने की ऊर्वरा धरती है—महिला। ऐसी कार्यशील, कर्मशील महिलाओं के संगठन का नाम है—तेरापंथ महिला मंडल

साध्वीश्री जी ने कहा कि आज पल्लावरम की महिला मंडल की नवमनोनीत टीम ने शपथ ग्रहण की। दायित्व हस्तांतरण हुआ है। पल्लावरम महिला मंडल संघीय गतिविधियों से सजगता के साथ जुड़ी हुई है एवं

गति-प्रगति कर रही है। निवर्तमान अध्यक्ष पंकज कोठारी ने अपने दायित्व का बखूबी निर्वाहन किया।

साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने आध्यात्मिक अनुष्ठान करवाया। बालक

दियान ढेलड़िया ने परिषद में साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अपनी भुआसा महाराज को लेकर मुंबई पथारने का निवेदन किया। निवर्तमान अध्यक्ष पंकज कोठारी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए वर्तमान टीम को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई। अध्यक्ष हेमलता पिरोदिया ने विचार व्यक्त करते हुए सभी महिलाओं को साथ लेकर करणीय कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की।

कन्या मंडल संयोजिका तितिशा रांका ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। संचालन उपाध्यक्ष रेखा मरलेचा ने किया। तेरापंथ सभाध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, चेन्नई तेममं उपाध्यक्ष अलका खेटेड़ी ने नवगठित टीम को शुभकामनाएँ संप्रेषित की।

वर्कशॉप एवं रैली का आयोजन

मैसूर।

E Free Life, Streets Free Life विषय पर एक वर्कशॉप एवं बाइक रैली का आयोजन किया गया। तेममं, तेरापंथ किशोर मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल ने इस बाइक रैली में भाग लिया। यह रैली तेरापंथ भवन से शुरू होकर अग्रहार सर्कल, के०आर० सर्कल, मैसूर पैलेस आदि मुख्य स्थानों से गुजरते हुए अग्रहार स्थित तेरापंथ भवन में पहुँची। रैली का उद्घाटन धरिणीदेवी मालगढ़ी आइ०पी०एस० पुलिस ट्रेनिंग स्कूल मैसूर की प्रिसिपल ने किया।

साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा—इ-फ्री

तो नहीं हो सकते हैं, लेकिन विवेकपूर्वक सोशल मीडिया का उपयोग करने का संकल्प कर सकते हैं। ई-फास्टिंग भी सुंदर प्रकल्प है, मोबाइल आदि के दुष्प्रभावों से बचने के लिए।

धरिणीदेवी ने कहा कि हालाँकि मोबाइल हमारे जीवन का अभिन्न अंग है, लेकिन कब, क्यों, कहाँ और कैसे इसका उपयोग हो, हमें ध्यान देना चाहिए। कार्यक्रम में गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में उपस्थित थे उम्मेद नाहटा एवं सरला नाहटा। कन्या मंडल ने मंगलाचरण किया। कन्या मंडल प्रभारी

त्याग की मूल कसौटी है भीतर से त्याग...

(पृष्ठ ४ का शेष)

भीतर में त्याग नहीं हुआ आसक्ति वो की वो है, ऐसे साधु वेश वाले का भी पूर्ण कल्याण नहीं होता है। भीतर से त्याग नहीं है, तो वो कभी बाहर का वेश छोड़ने को भी तैयार हो सकता है। त्याग, वैराग्य भीतर से हो, आसक्ति छूट जाए वो बड़ा त्याग हो सकता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि गुरु रहते हैं, तो शिष्य पर अंकुश रह सकता है। जो खाली होता है, उसमें राम-राम होता है, ऐसा कहता है।

खाली है, तो राम-राम है। मैंने संन्यास लिया, क्या मैं खाली हुआ। मेरी चेतना, मेरा मन खाली हुआ। मेरे में राग-द्वेष, माया, लोभ नहीं है। ये सब हैं, तो खालीपन कहाँ? मैंने खाली होने की साधना कहाँ की? खाली नहीं तो राम कैसे मिलेंगे, आत्मा कैसे दिखेंगी। जो मन रूपी जल राग-द्वेष की तरंगों से तरंगित होता है, उसमें परमात्मा के साक्षात्कार की बात नहीं। जो अलोल है, राग-द्वेष की तरंगें नहीं उठती ऐसा भाव है, मन है, वह व्यक्ति आत्मा का दर्शन कर सकता है।

तालाब के भीतर के भाग को देखने के लिए आवश्यक है कि तालाब का पानी स्वच्छ हो स्थिर हो। उसी प्रकार साधना में खाली मन से लगा और एक समय आया कि आत्मदर्शन हो गया।

दर्पण पर चेहरा देखने के लिए दर्पण स्थिर हो, साफ हो और उस पर आवरण न हो और देखने वाला चक्षुष्मान भी हो।

यह त्याग भीतर में आ जाए तो कल्याण की स्थिति निष्पन्न हो सकती है। हिंसा और परिग्रह की ग्रंथियाँ जो आत्मा को बाँधने वाली हैं। इन ग्रंथियों का त्याग बाहर और भीतर से करना आवश्यक है।

साधु सफेद कपड़े पहनता है, यह भी साधना में सहयोगी तत्त्व है। पहचान भी है कि ये साधु हैं। सफेद कपड़े सादगी का प्रतीक है। तेरहवें गुणस्थान में शुक्ल लेश्या है। हम लेश्या से अलेश्य बन जाएँ। हम शुक्लाम्बर हैं, भगवान महावीर की परंपरा से हैं। कपड़ों में शुक्लता है, तो भावों में भी शुक्ल लेश्या आ जाए। कई श्रमण ऊपर से पदार्थों का त्याग कर देते हैं, पर वे नहीं जानने वाले हैं, तो काम-भोगों में आसक्त भी रहते हैं। भोगों में आसक्त है, तो कल्याण में बड़ी बाधा हो सकती है। हम अनासक्ति की साधना करें, यह काम्य है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि हमारा लक्ष्य है, वीतरागता को प्राप्त करना। वीतरागता प्राप्त करने के अनेक लक्षण हैं। सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप के द्वारा वीतरागता उपलब्ध हो सकती है। प्रायश्चित् भी एक माध्यम बनता है वीतरागता का। प्रायश्चित् से आत्मा उज्ज्वल बनती है।

साध्वीर्वाय जी ने कहा कि हमें अपनी आत्मा को लोटे की तरह बार-बार माँजते रहना चाहिए, तभी आत्मा उज्ज्वल बनेगी। फिर वह गंदी और विकारग्रस्त नहीं होगी। आत्मा की चमक-उज्ज्वलता को बनाए रखना, साधना का एक उद्देश्य होता है। आत्मा के मलिन होने के भी अनेक स्रोत हैं। हम शुक्ल लेश्या की ओर आगे बढ़ें।

अमेरिका-दुबई से समागत समर्णी जिनप्रज्ञा जी व समर्णी शांतिप्रज्ञा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। हिरेन चोरड़िया ने गीत का संगान किया।

टीपीएफ द्वारा मेधावी छात्रों का सम्मान किया गया।

पूज्यप्रवर ने सम्यक् दीक्षा ग्रहण करवाई।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने कहा कि सम्यक् का एक रूप है—अनुकंपा।

संतोष कोठारी ने स्वागत भाषण द्वारा सबका स्वागत किया।

कन्या मंडल संयोजिका दर्शना

पोखरना ने अतिथि परिचय दिया। सभा और अणुव्रत के पूर्व अध्यक्ष मदनलाल मारू का भरपूर सहयोग रहा। कन्या मंडल की कन्याओं ने एक स्किट द्वारा विषय सबको जागृति का संदेश दिया। सेजल बुरड़ ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी राजुलप्रभा जी ने किया। इस अवसर पर मदनलाल मारू, तेरापंथ महिला मंडल, मैसूर की अध्यक्ष मंजु दक, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल नौलखा, तेरापंथ सभा के गणमान्य श्रावक, कोलकाता से नरेंद्र मुणोत एवं विजयलक्ष्मी मुणोत उपस्थित रहे।



दो दिवसीय ज्ञानशाला शिविर का आयोजन

गदग।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के सान्निध्य में द्विदिवसीय ज्ञानशाला शिविर का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा—फूल और बच्चे सृष्टि की सुंदरतम कृति हैं, बच्चों का सुधार भविष्य का सुधार है, शुभ भविष्य चाहते हैं तो ज्ञानशाला आवश्यक है। डॉ० साध्वी गवेषणाजी ने कहा कि बच्चों के जीवन पर उपदेश का जितना प्रभाव नहीं पड़ता उतना आपके आचरण का पड़ता है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि ध्वंस और निर्माण इन दो शब्दों से सभी परिचित हैं, ध्वंस सरल है निर्माण कठिन है। यदि बच्चों के जीवन का निर्माण करना है तो ५ गोल्डन वर्ड्स को याद रखें—Sorry, Thank you, Excuse me, Please, Morning। साध्वी मेरुप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा ‘अहंम की वंदना

फले’ स्वरों के साथ हुई। कार्यक्रम में स्वागत भाषण ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका शोभा संकलेचा ने दिया। सभा अध्यक्ष अमृतलाल कोठारी, उपासक विमला कोठारी ने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

मंच का संचालन सुरेश कोठारी ने किया। द्विदिवसीय ज्ञानशाला शिविर के अंतर्गत ही संस्था शिरोमणि तेरापंथी महासभा के पदाधिकारियों का अपनी संगठन यात्रा के अंतर्गत गदग पथारना हुआ। संस्था के सहमंत्री प्रकाश लोढ़ा ने ज्ञानशाला पर प्रकाश ढालते हुए गदग तेरापंथ सभा की गतिविधियों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि वर्तमान में महासभा के अंतर्गत लगभग ५५० ज्ञानशालाएँ संचालित हैं, उसमें लगभग १६००० ज्ञानार्थी हैं तथा उन्हें प्रशिक्षित करने हेतु लगभग ४६०० प्रशिक्षिकाएँ अपनी सेवाएँ धर्मसंघ को दे रही हैं। तेजराज चोपड़ा ने अपने विचार व्यक्त किए।

मुमुक्षु मंगलभावना समारोह

सिकंदराबाद।

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, के तत्त्वावधान में मुमुक्षु विनु संकलेचा का मंगलभावना समारोह मनाया गया। शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि अध्यात्म का प्रथम प्रवेश द्वारा है दीक्षा। अपनी प्रवृत्तियों को सीमित कर निवृत्ति का मार्ग है दीक्षा। लुभावने संसार से चित्त को हटाकर अपने भीतर की तैयारी

है दीक्षा। दीक्षा संसार का महान तीर्थ है। विनु संकलेचा ने गृहस्थ जीवन में रहकर सॉफ्टवेयर इंजीनियर की शिक्षा प्राप्त की, जैन विद्या, तत्त्वज्ञान आदि में विशेष योग्यता प्राप्त कर परिवार और समाज में नया कीर्तिमान स्थापित किया। कन्या मंडल और ज्ञानशाला में भी विनु संकलेचा ने अच्छी सेवाएँ दी। अब वो तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होने से पूर्व पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रविष्ट उपस्थित थे।

व्यक्तित्व विकास के लिए निर्मलता तेजस्विता जरूरी

बोलारम।

तेरापंथ भवन में नवरात्रि अनुष्ठान की संपन्नता पर साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि व्यक्तित्व विकास की पहली कामना है—निर्मलता। चंद्रमा से अधिक मेरी निर्मलता सिद्ध हो। प्रार्थना करें मैं निर्मल बनूँ। निर्मलता के विकास के लिए हमें ज्योति केंद्र पर सफेद रंग का ध्यान श्रेष्ठ होता है।

व्यक्तित्व विकास का दूसरा अमृत है तेजस्विता। सूर्य से ज्यादा हम तेजस्वी बनें। सूर्य के प्रकाश जैसा प्रकाश हमारे भीतर आता है तो हमारा व्यक्तित्व प्रकाशमय बन सकता है। तेजस्विता के लिए हमने नवरात्रि में अनेक प्रकार के जप मंत्रों की साधना की। उस शक्ति को हम सुरक्षित रखें।

तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा दमयंति सुराणा, श्राविका बविता कात्रेला ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की। साध्वी ज्योतियशा जी, साध्वी सुरभिप्रभा जी ने मधुर स्वरों से मंत्र शक्ति के विविध प्रयोग करवाए।

महिला मंडल द्वारा स्कूल में सेवा कार्यों का आयोजन

जयपुर।

तेम-शहर द्वारा राजकीय माध्यमिक विद्यालय, छतरपुरा में कक्षा ९० के विद्यार्थियों को ऑनलाइन अध्ययन के लिए ‘विंटेक स्मार्ट सॉल्यूशन सिस्टम’ लगाया गया। जिसका उद्घाटन अध्यक्ष निर्मला सुराणा ने किया। साथ ही बच्चों को प्लास्टिक के नुकसान से चंचल दुगड़ ने अवगत कराया। उन्होंने पेपर बैग बनाने का प्रशिक्षण दिया। बच्चों को कॉपी-पेंसिल का वितरण भी किया।

कार्यक्रम स्थल पर मंत्री पायल बैद, उपाध्यक्ष प्रतिभा चोरड़िया ने टीचर प्रिंसिपल व सरपंच का आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम की प्रायोजक शकुंतला चोरड़िया थी।

कमला छाजेड़ ने कहा कि ज्ञानशाला भावी तेरापंथ समाज की नींव है उस पर ध्यान देना समाज का दायित्व है। उत्तर कर्नाटक की ज्ञानशाला सहप्रभारी कमला पालगोता ने अपने भाव व्यक्त किए।

इस कार्यक्रम में कर्नाटक अंगूर रस एवं अंगूर बोर्ड के अध्यक्ष कातिलाल भासाली भी उपस्थित रहे।

ज्ञानशाला संपन्न समारोह में सभी बच्चों को तेरापंथ सभा द्वारा पुरस्कृत किया गया और दो दिवसीय शिविर में कन्या मंडल की सदस्य तृप्ति कोठारी एवं मुस्कान संकलेचा ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। उन्होंने बच्चों को गेम खिलाए एवं मनोरंजन करवाया और जो बच्चे गेम में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आए उनको पुरस्कृत किया गया। सभी बच्चों को सांत्वना पुरस्कार भी दिया गया। कार्यक्रम का संयोजन प्रशिक्षिका सारिका संकलेचा ने किया।



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि - अमूल्य निधि

बूतन गृह प्रवेश

विजयनगर।

लड़नुं निवासी, बैंगलोर प्रवासी भीखमचंद चोरड़िया के सुपुत्र अशोक चोरड़िया के नूतन गृह प्रवेश के कार्यक्रम का आयोजन जैन संस्कार विधि से करवाया गया। इस कार्यक्रम में परिषद के संस्कारक श्रेयांस गोलिषा ने संस्कारक एवं बसंत डागा ने सह-संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को संपन्न करवाया।

परिषद की ओर से चोरड़िया परिवार को मंगलभावना पत्रक एवं मंगलकामना पत्र भेंट किया गया। आभार ज्ञापन कार्यसमिति सदस्य बसंत डागा ने किया।

बूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

पेटलावद।

पारसमल बापूलाल पटवा परिवार के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक राजेश वोरा, कमल जैन व रुपम पटवा ने संपन्न करवाया। विधि का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र मंगल मंत्रोच्चार से व मंगलाचरण से किया। परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर मंगलभावना यंत्र की स्थापना करवाई।

पटवा परिवार की ओर से पंकज पी० पटवा व मनीष पटवा द्वारा सभी संस्कारकों का व तेयुप पेटलावद की पूरी टीम के प्रति आभार व्यक्त किया।

बूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

बड़ौदा।

सागरमल प्रकाश के भाई रमेशचंद्र श्रीमाल के नव निर्मित प्रतिष्ठान का जैन संस्कार विधि से संस्कारक एवं अभातेयुप सदस्य दीपक श्रीमाल द्वारा शुभारंभ का कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष पंकज बोलिया, तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष महावीर हिरण, तेयुप सदस्य विमल, रितेश, रवि, चिराग की उपस्थिति रही।

तेयुप, बड़ौदा ने रमेश श्रीमाल एवं पूरे श्रीमाल परिवार के प्रति साधुवाद एवं मंगलकामना प्रेषित की।

बूतन गृह प्रवेश

अहमदाबाद।

जितेंद्र कुमार जयचंद बोथरा का जैन संस्कार विधि से नूतन गृह प्रवेश करवाया गया। संस्कारक आनंद बोथरा, प्रकाश धींग एवं वीरेंद्र सालेचा ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ मंगलभावना पत्रक स्थापित कर गृह प्रवेश विधि को संपादित किया। पारिवारिक महिलाओं ने सुमधुर मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। तेयुप मंत्री कपिल पोखरना ने बोथरा परिवार को शुभकामनाएँ प्रेषित की।

तेयुप की ओर से बोथरा परिवार को प्रशस्ति पत्र के साथ मंगलभावना पत्रक भेंट दी गई। कार्यक्रम में तेयुप उपाध्यक्ष पंकज धीया एवं कार्यसमिति सदस्य पीयूष बोथरा की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन संस्कारक आनंद बोथरा ने किया। बोथरा परिवार से जयचंद बोथरा ने तेयुप एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

बूतन गृह प्रवेश

गंगाशहर।

गंगाशहर-मुंबई निवासी, चेन्नई प्रवासी चांदनी देवी-गणेश तातेड़ के नए फ्लैट का गृह प्रवेश संस्कारक स्वरूपचंद दांती एवं संतोष सेठिया द्वारा संपूर्ण विधि-विधान सहित जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया।

परिवार की ओर से गणेश की माताजी सरलादेवी तातेड़ ने जैन संस्कार विधि के कार्यक्रम की प्रशंसा की तथा संस्कारकों का आभार व्यक्त किया। संस्कारक स्वरूपचंद दांती एवं तातेड़ परिवार को धन्यवाद प्रेषित किया।

भूमि पूजन

भीनासर।

भीनासर निवासी पानमल बैद के पुत्र एवं पुत्रवधू पुनीत रश्मि बैद के नूतन मकान हेतु भूमि पूजन तथा नींव का मुहूर्त जैन संस्कार विधि से हुआ। अभातेयुप संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया तथा अभातेयुप संस्कारक व तेयुप गंगाशहर के मंत्री देवेंद्र डागा ने भूमि पूजन तथा नींव मुहूर्त का मांगलिक आयोजन विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।



आत्मा के आसपास

□ आचार्य तुलसी □

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा



प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा

लेनी पड़ती है यहाँ, उपसंपदा उदार।
सहज समर्पित भाव से, बना हृदय निर्भार॥
मार्ग और सम्यक्त्ववर, संयममय आचार।
यह उत्तम उपसंपदा, शुभ भविष्य संस्कार॥
पदन्यास अध्यात्म में, करता हूँ अनिवार्य।
प्रथम मार्ग उपसंपदा, देते गुरुवर आर्य॥
अंतर जागरणा-जगत में मेरा संचार।
यह द्वितीय उपसंपदा, कर्सूँ सहज स्वीकार॥
भीतर में रमता रहूँ, जागरूकता साथ।
यह तृतीय उपसंपदा, आगम में आख्यात॥

प्रश्न : ध्यान के शिखरों में साधक सामान्य रूप से यों ही प्रविष्ट हो जाता है या उसे कोई विशेष संकल्प स्वीकार करना पड़ता है?

उत्तर : विशिष्ट साधना के लिए साधक का उपसंपन्न होना जरूरी है, दीक्षित होना जरूरी है। उपसंपन्न हुए बिना साधक अपने निर्देशक के आदेश का स्वीकार नहीं कर सकता। प्रत्येक ध्यान-पञ्चति के अपने-अपने आदेश होते हैं। प्रेक्षाध्यान के तीन आदेश हैं—मार्ग, सम्यक्त्व और संयम। साधक इन आदेशों को इस भाषा में स्वीकार करता—

मग्नं उवसंपञ्जामि,
सम्पत्तं उवसंपञ्जामि,
संजमं उपसंपञ्जामि।

पहला आदेश लक्ष्य की खोज से संबंधित है। लक्ष्य की खोज बिना कोई भी व्यक्ति नियामकता के साथ आगे नहीं बढ़ सकता। लक्ष्य नियामक होता है। जब तक साधक को अपने लक्ष्य का बोध ही नहीं होगा, वह कहाँ जाएगा? एक व्यक्ति टिकट लेने गया। टिकट बाबू ने पूछा—‘कहाँ जाना है आपको? किस गाँव की टिकट दूँ?’ वह व्यक्ति बोला—‘मुझे अपनी ससुराल जाना है।’ ‘ससुराल किस गाँव में है?’ यह पूछे जाने पर वह बोला—‘गाँव का नाम नहीं जानता। मुझे तो ऐसे ही टिकट दे दो।’ गाँव का निर्धारण किए बिना टिकट नहीं मिल सकता। इसी प्रकार लक्ष्य का निर्धारण हुए बिना प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता। मार्ग शब्द की निष्पत्ति मृगडण् धातु से होती है। इसका अर्थ है—अन्वेषण करना। मार्ग एक प्रकार से लक्ष्य की खोज है अथवा लक्ष्य तक पहुँचने का साधन है। लक्ष्य का निर्णय होने के बाद मार्ग की उपलब्धि बहुत आवश्यक है।

मार्ग बहुत होते हैं। वे सब भिन्न-भिन्न लक्ष्यों तक पहुँचते हैं। प्रत्येक मार्ग किसी मंजिल तक पहुँचकर समाप्त हो जाता है। अब प्रश्न यह है कि मार्ग प्रशस्त कौन-सा है? मेरे अभिमत से कोई भी मार्ग एकांतः: सही नहीं होता और एकांतः: गलत नहीं होता। गलत और सही का निर्धारण उसके साथ जुड़ी हुई अपेक्षा पर निर्भर करता है। एक व्यक्ति को कलकत्ता जाना है और वह बंवई जाने वाली ट्रेन पकड़ता है, उसके लिए वह मार्ग गलत है। किंतु जिसे बंवई पहुँचना है, उसके लिए वह मार्ग सही है। एक व्यक्ति को बीमारी तो है बदहजमी की और दवा लेता है ज्वर की, यह गलत मार्ग है। यद्यपि बदहजमी और ज्वर दोनों बीमारियों की दवा अपने-अपने क्षेत्र में सही हैं, किंतु इनका गलत उपयोग होने से ये गलत हो जाती हैं। जीवन के सामान्य व्यवहार में सही और गलत मार्ग का सम्यक् अवबोध बहुत जरूरी होता है, वैसी स्थिति में जीवन के आंतरिक पक्ष में लक्ष्य तक पहुँचने के लिए सही मार्ग की खोज कितनी आवश्यक है, यह तथ्य किसी से अज्ञात नहीं है।

प्रेक्षाध्यान के संदर्भ में साधक का लक्ष्य होता है—चित्त की निर्मलता। प्रेक्षा-साधक केवल एकाग्रता के लिए ध्यान नहीं करता। क्योंकि एकाग्रता एक शिकारी में भी हो सकती है, कामार्थी में भी हो सकती है और चोर में भी हो सकती है। एकाग्रता के अभाव में इन कार्यों में भी सफलता नहीं मिलती। कार्य की सफलता के साथ एकाग्रता का संबंध अनिवार्य है। पर एक आत्म-साधक व्यक्ति कोरी एकाग्रता के सहारे अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकता। चित्त की निर्मलता या प्रसन्नता के साथ जो एकाग्रता आती है, वही साधक को उसकी मंजिल तक पहुँचाती है। मार्ग के प्रति साधक का जो सही दृष्टिकोण है, वही सम्यक्त्व है। सम्यक्त्व ध्यान की उपसंपदा का दूसरा बिंदु है।

(क्रमशः)

सांसों का इकतारा

□ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा □

(२६)

स्नेह का अवदान तुम देते रहो तो
दीप जीवन का सदा जलता रहेगा
नीर से अभिषेक तुम करते रहो तो
वृक्ष जीवन का सदा फलता रहेगा।

कल्पना के पट निरंतर बुन रही हूँ
किंतु अब तक नहीं कुछ भी हाथ आया
लग रहा मेला सुरों का सामने ही
किंतु अब तक भी न कोई गीत गया
सत्य का सन्धान तुम करते रहो तो
स्वप्न नयनों में नया पलता रहेगा।

चाह मंजिल तक पहुँचने की जगी है
मार्ग में मन किस प्रलोभन में फँसा है
शांति देता है मुझे वीरान जंगल
नगर चारों ओर फिर क्यों यह बसा है
भीतरी एकांत तुम देते रहो तो
भीड़ का उपसर्ग खुद टलता रहेगा।

बाँधने मन मोम के बंधन बहुत हैं
लोह की जंजीर लेकर क्या करूँगी
तीर का अनुबंध है पक्का अगर जो
मैं भुजाओं से समंदर को तरूँगी
पंथ में पाथेय तुम देते रहो तो
आपदा का हिमशिखर गलता रहेगा।

काव्य लिखना चाहती हूँ जिंदगी का
आदि तुम उसके विपुल विस्तार हो तुम
कर नहीं सकती अलग तुमको कहीं भी
मध्य की क्या बात उपसंहार हो तुम
तिमिर को आलोक तुम करते रहे तो
कारवां यह श्वास का चलता रहेगा॥

(३०)

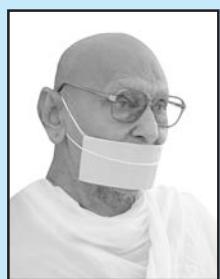
तुम उदार मन से सबको आलोक बाँटते
किंतु नहीं हो पाया अब तक परिचय मेरा
हुआ निशा से मिलन आज तक कभी सूर्य का
खोलो पलकें मेरी होगा स्वयं सवेरा॥।

चपल विचारों के खग ये निर्बन्ध धूमते
नहीं नीड़ का आमंत्रण भी सुन पाते हैं
श्यामल मेघों की जब नभ में धटा उमड़ता
मोर-पर्पीहे गीत खुशी के तब गाते हैं
सिद्धश्री विकास-उत्सव की लिखी गई है
तोड़ गिराएँगे जग की जड़ता का धेरा॥।

पीत पात सपनों के झर-झार मिले धूल में
सूख गई है मधुर कल्पनाओं की क्यारी
सिंचन दिया सुधा का तब अविरल धारा से
हुई उच्छ्वसित मन की बंजर धरती सारी
फलक जिंदगी का देखो कोरा कागज है
युग को मिला अलौकिक तुम-सा कुशल चितेरा॥।

जल उठते हैं दीपक प्राणों के मंदिर में
लगता निकट तुम्हारे जब गीतों का मेला
स्वर-संधान बाँध देता है समां अनूठा
यह विराग-राग का शुभ संगम अलबेला
कर देती अभिभूत तुम्हारी सृजन-चेतना
लिखा क्रांति की स्याही से तुमने हर पैरा॥।

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

आज्ञावाद

भगवान् प्राह

(१६) आक्रमतां प्रतिरोधः, प्रत्याक्रमणपूर्वकम्।
क्रियते शक्तियोगेन, हिंसा स्यात् सा विरोधजा॥

आक्रमणकारियों का प्रत्याक्रमण के द्वारा बलपूर्वक प्रतिरोध किया जाता है, वह विरोधजा हिंसा है। यहाँ आक्रांत बनने का निषेध है। गृहस्थ अपने बचाव के लिए प्रत्याक्रमण करता है। सभी राष्ट्र स्व-सीमा में रहना सीख जाएँ, कोई किसी पर आक्रमण करने की चाल न चले तो शांति सहज ही फलित हो जाती है।

आक्रमण की प्रवृत्ति युद्ध को जन्म देती है, शांति को भंग करती है और अंतर्राष्ट्रीय मर्यादा का अतिक्रमण करती है। भगवान् महावीर ने ऐसा नहीं कहा कि देश की सीमा पर शत्रुओं का आक्रमण हो और तुम मौन बैठे रहो, लेकिन यह कहा कि आक्रांत मत बनो।

आक्रमण के प्रति प्रत्याक्रमण करना अहिंसा नहीं, किंतु विरोधजा हिंसा है।

(१७) लोभो द्वेषः प्रमादश्च, यस्या मुख्यं प्रयोजकम्।
हेतुः गौणों न वा वृत्तेः, हिंसा संकल्पजाऽस्ति सा॥

जिस हिंसा के प्रयोजक-प्रेरक, लोभ, द्वेष और प्रमाद होते हैं और जिसमें आजीविका का प्रश्न गौण होता है या नहीं होता, वह संकल्पजा हिंसा है।

(१८) सर्वथा सर्वदा सर्वा, हिंसा वर्ज्या हि संयतैः।
प्राणघातो न वा कार्यः, प्रमादाचरणं तथा॥

संयमी पुरुषों को सब काल में, सब प्रकार से, सब हिंसा का वर्जन करना चाहिए, न प्राणघात करना चाहिए और न प्रमाद का आचरण।

(क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरमल ‘लाडनूं’ □

(३) चारित्र मार्ग

प्रश्न-१ : चारित्र किसे कहते हैं?

उत्तर : आत्मा की अशुद्ध प्रवृत्तियों के निरोध को चारित्र कहते हैं।

प्रश्न-२ : चारित्र किसे कहते हैं?

उत्तर : आत्मा प्राप्ति के बिना कोई भी जीव शैलेशी अवस्था को प्राप्त नहीं होता, पूर्ण संवरयुक्त नहीं होता। शैलेशी अवस्थाप्राप्ति व पूर्ण संवरयुक्त जीव ही कर्ममुक्त हो सकता है।

प्रश्न-३ : चारित्र की प्राप्ति कैसे होती है?

उत्तर : चारित्र मोहनीय की बारह-अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानी व प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ तथा दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृतियों के क्षयोपशम से चारित्र की प्राप्ति होती है। इनमें किसी-किसी के अनंतानुबंधी कथाय चतुष्क तथा दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृतियों का क्षय भी हो सकता है।

प्रश्न-४ : चारित्र के कितने प्रकार हैं?

उत्तर : चारित्र के पाँच प्रकार हैं-

- | | | |
|--------------------|-------------------|---------------------|
| (१) सामायिक | (२) छेदोपस्थापनीय | (३) परिहार विशुद्धि |
| (४) सूक्ष्म संपराय | (५) यथाख्यात | |

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)



□ आचार्य महाश्रमण □

आचार्य पादलिप्त

(क्रमशः)

प्रबंध-कोष के अनुसार इस विस्मयकारक घटना को देखकर गणिका बोली—‘मुने! आप मरकर भी हमारे मुख से स्तुति पाठ करवाते हैं।’

पादलिप्त ने कहा—‘पंचम वेद का संगान मृत्यु के बाद ही होता है।’ आचार्य पादलिप्त के इस उत्तर से शोकपूरित वातावरण खिलखिला उठा।

आचार्य पादलिप्त के पास मंत्रविद्याओं का अतिशय बल था। पारस पत्थर से लोहा सोना बन जाता है। आचार्य पादलिप्त के द्वारा मंत्रित प्रश्वरण आदि के स्पर्श से भी प्रस्तर के खंड स्वर्ण-रूप में परिवर्तित हो जाते थे। ‘पारस पुरुष’ विशेषण आचार्य पादलिप्त की इस क्षमता की अभिव्यक्ति के साथ उनकी अन्य अंतरंग क्षमताओं का द्योतक भी है।

मंत्र-विद्या का प्रयोग कर पादलिप्तसूरि ने मुरुण्ड आदि राजाओं को धर्म प्रचार के कार्य में सहयोगी बनाया एवं आश्चर्यजनक कवित्व-शक्ति के द्वारा उन्होंने विद्वद्जनों ने आदर पाया था। आर्य पादलिप्त को दस वर्ष की अवस्था में नागहस्ती सूरि ने आचार्य पद पर नियुक्त किया था। अतः आर्य पादलिप्त के समय वी०नि० की ज्वाँ शताब्दी का उत्तरार्द्ध (विं० की तृतीय शताब्दी का पूर्वार्द्ध) सिद्ध होता है। प्रो० लॉयमन ने आचार्य पादलिप्त का समय ईस्वी सन् दूसरी, तीसरी शताब्दी माना है। इस आधार पर भी आचार्य पादलिप्त वी०नि० की ज्वाँ-ट्वीं (विं०की तृतीय) शताब्दी के विदान् सिद्ध होते हैं।

आचार्य वज्रस्वामी

अवन्ती देश के तुम्बवन नगर में धनगिरि नाम का एक सुसंपन्न गृहस्थ था। उसकी धर्मशीला पत्नी का नाम था सुनंदा। सुनंदा के गर्भवती होने पर धनगिरि ने उससे स्त्रीकृति लेकर आर्य सिंहगिरि से संयम स्वीकार कर लिया। सुनंदा के योगियत्व पुत्र हुआ। परिवार की स्त्रियाँ पुत्र-जन्म का उत्सव मनाते हुए कहने लगी, धनगिरि तो मुनि बन गया। यदि आज वह यहाँ होता तो कितना उल्लास होता!

नवजात शिशु के कान में ये बोल पड़ते ही उसे जातिस्मरण ज्ञान हो गया। मन में सोचा, मेरे मुनि बनने में कहीं माता का प्रचुर मोह बाधक न बन जाए। यही सोचकर रोने लग गया। प्रतिसमय रोता ही रहता किसी भी प्रकार वह चुप होता ही नहीं। माता छह महीने में ही व्यथित हो उठी। संयोग की बात थी, आर्य सिंहगिरि विहार करते हुए वहाँ पधारे। मुनि धनगिरि और समित मुनि (जो कि सुनंदा के भाई थे) भिक्षार्थ जाने लगे तब गुरु ने कहा—आज तुम्हें जो भी भिक्षा में मिले उसे ले आना।

दोनों मुनि भिक्षार्थ सुनंदा के यहाँ ही गए। धनगिरि को देखकर सुनंदा ने तत्क्षण कहा—यह अपना बालक रोता ही रहता है। मैं तो अब पूरी-पूरी ऊब चुकी हूँ। ले जाइए आप अपने बच्चे को।

मुनि गुरु-आज्ञा का स्मरण करते हुए लेने के लिए हाथ बढ़ाते हुए बोले—अभी तो तू दे रही है पर फिर कभी माँगने लग जाए तो? सुनंदा ने आर्य समित और पास खड़ी अपनी सखियों की साक्षी से प्रतिज्ञा करके पुत्र मुनि को सौंप दिया। मुनि धनगिरि उसे झोली में लेकर गुरु के पास आए। वह झोली आर्य सिंहगिरि को दी। सिंहगिरि के मुँह से निकला—आज यह इतना भार क्या लाया है? क्या वज्र है? बस तब से इदनका नाम वज्र पड़ गया। शश्वारत श्राविका ने उसका पालन किया। बाले का रोना बंद हो गया। जब वज्र तीन वर्ष के हो गए तब सुनंदा ने अपने पुत्र को पुनः लेना चाहा। राजसभा में निर्णय होना था। एक ओर माता और एक ओर मुनि बैठ गए। राजा का संकेत था स्वेच्छा से शिशु जिसके पास चला जाएगा बालक उसी का मान जाएगा।

माता ने अनेक प्रकार के खिलौने, मिठाई आदि दिखाकर अपनी ओर बालक को बुलाना चाहा पर वज्र टस से मस न हुआ। मुनि धनगिरि ने रजोहरण उठाकर कहा—वत्स! संयम लेना चाहते हो तो अपनी कर्मज झाइने के लिए इसे लो। बात पूरी नहीं हो पाई थी कि बालक मुनि की गोद में जा बैठा।

(क्रमशः)



टीपीएफ शपथ ग्रहण समारोह

हैदराबाद।

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में टीपीएफ का शपथ ग्रहण समारोह एवं 'सेवा करो सफल बनो' कार्यशाला तेरापंथ भवन में आयोजित की गई। शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि सेवा करने से मनुष्य तीर्थकर नाम गोत्र का बंधन कर सकता है। दूसरों के लिए जो काम किया जाता है वही परमार्थ का कार्य है। जिसका हृदय विशाल है। लौकिक सेवा का अपना महत्व है। मदर टेरेसा ने विलक्षण सेवा कर नया कीर्तिमान बनाया। सेवा करने से शक्ति का विकास होता है।

उन्होंने कहा कि टीपीएफ की नई टीम का शपथ ग्रहण हुआ है। सभी संघ के प्रति सेवा भावना रखें एवं टीपीएफ के आयामों पर निष्ठापूर्वक संकल्प के साथ कार्य करें। सबको मिलकर एकता के साथ कार्य करना चाहिए। नई टीम के लिए आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ, समस्त साध्वीवृंद ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

शपथ ग्रहण समारोह की शुरुआत टीपीएफ सदस्यों द्वारा गीत के सुमधुर मंगलाचरण से हुई। तत्पश्चात् अध्यक्ष मोहित बैद को निर्वत्तमान अध्यक्ष दीपक संचेती ने शपथ दिलाई। उसके बाद अध्यक्ष मोहित बैद ने अपनी टीम के पदाधिकारियों व कार्यसमिति सदस्यों को शपथ दिलाई।

अध्यक्ष मोहित बैद ने अपने स्वागत भाषण में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि हमें नए-नए कार्यक्रम करके टीपीएफ को और नई ऊँचाई पर लेकर जाना है। उन्होंने पिछले एक वर्ष के कार्यों का संक्षिप्त विवरण दिया।

इस अवसर पर टीपीएफ राष्ट्रीय सहमंत्री ऋषभ दुगड़, तेरापंथ सभा सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुरेश सुराणा, जैन सेवा संघ के अध्यक्ष अशोक बरमेचा, महिला मंडल अध्यक्षा अनिता गीड़िया, तेयुप अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, अणुवत् समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी ने नवगठित टीम को शुभकामनाएँ दी। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सुनील पगारिया ने किया। कार्यक्रम के अंत में सहमंत्री अणुवत् सुराणा ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

मुक्ति के लिए शक्ति, भक्ति और अनुरक्ति जरूरी

कांकरोली।

मुनि संजय कुमार जी के सान्निध्य में नवरात्रि का विशेष अनुष्ठान किया गया। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि हर काम के लिए शक्ति की अपेक्षा रहती है, सब शक्ति संपन्न होना चाहते हैं, किंतु हमें शक्ति का उपयोग अच्छे काम में लगाना चाहिए। नवरात्रि के दिनों में अनुष्ठान करने से शक्ति, भक्ति और अनुरक्ति जगती है। इन दिनों में जो अनुष्ठान में मंत्र जप यंत्र तंत्र आदि किए जाते हैं वह शीघ्र सफल हो जाते हैं। मुनि प्रकाश कुमार जी ने मंत्र साधना के विशेष प्रयोग करवाए और बताया कि मंत्र के लिए दिशा की शुद्धि, वचन को शुद्धि एवं भागों में विशुद्धि जरूरी है।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाश सोनी एवं महिला मंडल अध्यक्षा इंदिरा पगारिया ने आगामी कार्यक्रम की जानकारी दी।

दो दिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला संपन्न

विजयनगर।

प्रेक्षा फाउंडेशन के अंतर्गत प्रेक्षाध्यान केंद्र के तत्त्वावधान में साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा, तेयुप व महिला मंडल द्वारा संयुक्त रूप से दो दिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें ७५ भाई-बहनों ने भाग लिया। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने शिविरार्थियों को प्रेक्षाध्यान के इतिहास, अर्थ एवं प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा व प्रेक्षा चर्या के सूत्रों के बारे में जानकारी दी। साध्वी आस्थाश्री जी ने मैत्री की अनुप्रेक्षा व अभ्य की अनुप्रेक्षा का प्रयोग कराया। साध्वी विज्ञप्रभा जी ने मंत्रों का प्रयोग व उनके लाभ के बारे में बताया।

शिविरार्थियों को प्रशिक्षण देते हुए प्रशिक्षिका वीणा बैद ने लेश्याध्यान व प्रेक्षाध्यान में रंगों का महत्व तथा चैतन्य केंद्रों के बारे में जानकारी दी। प्रेक्षा प्रशिक्षिका रेखा पितलिया ने आसन-प्राणायाम का वैज्ञानिक आधार व उनसे होने वाले लाभ के बारे में जानकारी दी तथा आसन तथा यौगिक क्रियाएँ व कायोत्सर्ग के प्रयोग करवाए। प्रेक्षा प्रशिक्षक छत्र सिंह मालू ने ध्यान का प्रयोग करवाया तथा महाप्राण ध्वनि के प्रयोग की विधि व लाभ के बारे में जानकारी दी। महिला मंडल मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने एकाग्रता के साथ एक एकिटिविटी करवाई। तेयुप मंत्री विकास बांटिया ने यौगिक क्रियाओं का प्रयोग करवाया। दोनों दिनों की कार्यशाला का शुभारंभ प्रेक्षाध्यान गीत के संगान के साथ हुआ। द्वितीय दिन के सत्र के दौरान विशेष रूप से आमंत्रित नेचरोपैथी डॉक्टर नीरू जैन ने कैसा हो एक ध्यान साधक का आहार के बारे में जानकारी दी। कार्यशाला के दौरान तेरापंथी सभा, बैंगलोर के अध्यक्ष सुरेश दक तथा अर्हम् मित्र मंडल के अध्यक्ष बहादुर सेठिया ने अपने विचार रखे।

कार्यशाला के समापन सत्र में उपस्थित डालमचंद नौलखा ने अपने विचार रखे।

सभा, तेयुप एवं महिला मंडल की पूरी टीम व कन्या मंडल ने कार्यशाला के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सभा अध्यक्ष राजेश चावत, तेयुप अध्यक्ष अमित दक व महिला मंडल अध्यक्ष प्रेम भंसाली ने इस दो दिवसीय कार्यशाला के सफल आयोजन पर हर्ष जताया। सभा मंत्री मंगल कोचर ने आभार व्यक्त किया। दोनों दिनों के सत्र का संचालन छत्र सिंह मालू ने किया।

कुक विदाउट फायर प्रतियोगिता

सूरत।

तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में कन्या मंडल द्वारा 'कुक विदाउट फायर कंपिटीशन' का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में १८ कन्याओं ने भाग लिया एवं कन्या मंडल की सभी कन्याएँ उपस्थित थीं। प्रतियोगिता के जनक सरिता सेखानी रहे।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान खुशी बेताला, दूसरा स्थान मैत्री गुलगुलिया, तीसरा स्थान निकिता संकलेचा एवं प्रोत्साहन पुरस्कार हिमांशी सालेचा को दिया गया। इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल के मंत्री सीमा भोगर एवं कन्या मंडल प्रभारी शिल्पा मादरेचा उपस्थित थे।

आचार्य महाप्रज्ञ पर आधारित आध्यात्मिक प्रतियोगिता का आयोजन

पेटलावद।

मुनि वर्धमान कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप, पेटलावद द्वारा आध्यात्मिक प्रतियोगिता-८ का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के जीवन पर आधारित थी। जिसमें प्रथम सुशीला लोकेश भंडारी, द्वितीय पुष्पा नरेंद्र पालरेचा व प्रियंका प्रतीक मोन्नत तथा तृतीय ललिता भूपेंद्र भंडारी व मोना हिमांशु मोन्नत रहे। प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को तेयुप, पेटलावद द्वारा सम्मानित किया गया। तेयुप की ओर से अध्यक्ष रूपम पटवा द्वारा सभी संभागियों को शुभकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला प्रशिक्षिका पुष्पा पालरेचा द्वारा किया गया।

एकाहिनक तुलसी-शतकम्

मुनि सिद्धकुमार

(क्रमशः)

- (२६) निर्मलं मादकं चैवासीदुभे भवतो वपुः। प्रकर्तुं केन शक्नोमि, तुलनामतुलस्य च॥। आपका शरीर निर्मलता एवं मादकता, दोनों लिए हुए था। मैं अतुलनीय की तुलना कैसे करूँ?
- (२७) शिष्येभ्यः करस्पी ते, छत्रं निश्चन्तकारकम्। प्रकर्तुं केन शक्नोमि, तुलनामतुलस्य च॥। आपका कर रूपी छत्र शिष्यों के लिए निश्चन्तकारी था। मैं अतुलनीय की तुलना कैसे करूँ?
- (२८) विरोधिनोऽपि सञ्जाताश्चालनेन प्रभाविताः। प्रकर्तुं केन शक्नोमि, तुलनामतुलस्य च॥। आपके चाल से तो विरोधी भी प्रभावित हो जाते। मैं अतुलनीय की तुलना कैसे करूँ?
- (२९) अतिभव्यस्तवासीच्च, ललाटश्चतुरङ्गुलः। प्रकर्तुं केन शक्नोमि, तुलनामतुलस्य च॥। आपका चार अंगुल का ललाट अत्यंत ही भव्य था। मैं अतुलनीय की तुलना कैसे करूँ?
- (३०) देवा अपि स्म लोठन्ते, भवतश्चरणे शुभे। प्रकर्तुं केन शक्नोमि, तुलनामतुलस्य च॥। आपके पावन चरणों में देवता भी लोटते थे। मैं अतुलनीय की तुलना कैसे करूँ?
- (३१) अस्ति ग्रस्तं तनावेन, मनः क्षुब्धं यदा-यदा। आकुलव्याकुलं चित्तं, तदा श्रीतुलसीं भजेत्॥। जब-जब मन तनाव से ग्रस्त हो, क्षुब्ध हो, चित्त आकुल-व्याकुल हो रहा हो, तब श्री तुलसी का स्मरण करो।
- (३२) उपद्रवा यदाऽक्रमन्तीत्युदयेन सर्वतः। उपायः कोऽपि नो पश्यन्, तदा श्रीतुलसीं भजेत्॥। जब कर्मोदय के कारण समया सभी और से आक्रमण करे और कोई उपाय न दिय रहा हो, तब श्री तुलसी का भजन करो।
- (३३) यदा मोहतमो व्याप्तं, वर्धमानाऽस्ति वेदना। तदुपशमनायैव, तदा श्रीतुलसीं भजेत्॥। जब मोहरूपी अंधकार व्याप्त हो जाए और वेदना बढ़ती जाए तब उसके उपशमनार्थ श्री तुलसी का स्मरण करो।
- (३४) मूर्च्छाऽवर्धत रागस्य, द्वेषदवाग्निरञ्जलत्। यदेत्थमस्ति कष्टं च, तदा श्रीतुलसीं भजेत्॥। राग की मूर्च्छा बढ़ जाए, द्वेष रूपी दावानल सुलग जाए, जब ऐसा कष्ट हो तब श्री तुलसी का भजन करो।
- (३५) 'अहं सर्वश्च मे सर्वो', यदा-यदा विचारितम्। अहङ्कारविनाशाय, तदा श्रीतुलसीं भजेत्॥। जब ऐसा विचार आए कि मैं ही सब कुछ और सब कुछ मेरा तब इस अहङ्कार के विनाश के लिए श्री तुलसी का भजन करो।
- (३६) निःश्रेयससुखक्षेमद्करी श्रीतुलसीस्तुतिः। चमत्कारकं नाम, द्वृतः श्रीतुलसीं भजेत्॥। परमाराध्य गुरुदेव श्री तुलसी की स्तुति मोक्ष-सुख दाता तथा कल्याणकारी है। तुलसी नाम ही अपने आपमें चमत्कारी है, अतः श्री तुलसी का भजन करो।
- (३७) औषधिनास्ति मूर्खस्य, भर्तृहरिः समुक्तवान्। परन्तु तव पार्श्वे ऽपि, तेषामपि निवारणम्। राजा भर्तृहरि ने कहा था कि मूर्ख की कोई औषधि नहीं, परंतु गुरुदेव! आपके पास तो उनका भी समाधान था।

(शेष अंगते अंक में)

◆ जीवन का सार है सच्चाई। दुनिया में यथार्थ भाव आज भी जीवित है। कुछ लोग ऐसे मिलेंगे जो यथार्थ की आराधना करने का प्रयास करते हैं।

—आचार्यश्री महाश्रमण



मासखण्डन तप अनुमोदना कार्यक्रम

जसोल।

मुनि धर्मेश कुमार जी के सान्निध्य में नाकोड़ा रोड, तेरापंथ भवन में कार्यक्रम में मुनि यशवंत कुमार जी के ३१ की तपस्या (मासखण्डन) एवं चातुर्मास में आठ व आठ से ऊपर तपस्या के उपलक्ष्य में तप अनुमोदना का कार्यक्रम आयोजित हुआ।

मुनि धर्मेश कुमार जी ने कहा कि दृढ़-संकल्प वाले ही तपस्या कर सकते हैं। मुनिश्री ने तपस्या की अनुमोदना करते हुए उनके भावी जीवन के प्रति मंगलकामना करते हुए कहा कि तुम तपस्या के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ते रहो।

और धर्मसंघ की प्रभावना बढ़ाते रहो।

मुनि यशवंत कुमार जी ने तप का महत्व बताते हुए सभी को तप के क्षेत्र में अपनी शक्ति का नियोजन करने की प्रेरणा दी। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष मोतीलाल जीरावला ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में सिवांची-मालाणी, तेरापंथ क्षेत्रीय संस्थान के अध्यक्ष नेमीचंद आर० चोपड़ा, अभावेयुप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष गौतमचंद डागा-चेन्नई, बालोतरा नगर परिषद चेयरमैन के प्रतिनिधि सुरेश कुमार वैद मेहता, शंकरलाल ठेलड़िया आदि अनेक जनों ने अपने विचार व्यक्त

किए।

साधु-साध्वीवृद्ध के संदेश का वाचन दूंगरचंद सालेचा, संपत्तराज चोपड़ा व रीटा देवी ने किया। तेयुप-सभा जसोल, महिला मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएँ, सालेचा परिवार जसोल, महिला मंडल पचपदरा, महिला मंडल बालोतरा एवं स्वर संगम तेयुप बालोतरा सहित सभी ने अलग-अलग तप-अनुमोदना में सुमधुर गीतिका का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि डॉ विनोद कुमार जी ने किया।

जो मस्तक छुकते, वो ज्ञान प्राप्त कर मुस्कराते

मदुरै।

मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में बचपन में कैसे करें जीवन का विकास कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि व्यक्ति की सही पहचान उसके रंग-रूप या जाति से नहीं वरन् उसके जीवनगत संस्कार से होती है। बचपन के संस्कार पचपन तक रहते हैं। यह सुखी जीवन की नींव है। संस्कारों के बिना कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि सबसे

कठिन कार्य होता है अपने आपको बदलना, जब तक अपने स्वभाव को, अपनी आदत को नहीं बदलेंगे तो संस्कारों को अर्जित नहीं कर पाएँगे। संस्कारों को अर्जित करने के लिए अपना व्यवहार प्रभावशाली रहे। हमें दूसरों के दिलों में स्थान जमाना चाहिए।

माता-पिता स्वयं अच्छे संस्कारों में ढलें, फिर भावी पीढ़ी को अच्छे संस्कारों में ढालने का प्रयास करें। मुनिश्री की प्रेरणा से सभी ने दिवाली के अवसर पर एक साल के पटाखे नहीं जलाने के संकल्प लिए।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि शिष्ट आचार और व्यवहार से बनता शिष्टाचार, बड़ों का आदर-सत्कार मर्यादित जीने का आधार। बाल मुनि जयदीप कुमार जी ने गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम में तिरुचि से ज्योति सुराणा, तेयुप अध्यक्ष संदीप बोकाड़िया, तेयुप मंत्री राजकुमार नाहटा, महिला मंडल अध्यक्ष नयना पारख आदि ने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम के अंत में जैन विद्या कार्यशाला 'तीन बातें ज्ञान की' के प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

तपस्या मंगल कलश है

साहुकारपेट, चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में सुरेश सिंधी के तैंतीस दिन की तपस्या के उपलक्ष्य में तप अभिनंदन, अनुमोदना कार्यक्रम आयोजित हुआ। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि तपस्या वह मंगल कलश है, जिसके जल को पीने वाला हर व्यक्ति मंगलमय बन जाता है। तपस्या वह प्रकाशदीप है, जो जिंदगी की हर अंधेरी गली को रोशनी से भर देता है। तपस्या एक सुरम्य वाटिका है, जिसमें भ्रमण करने वाला ही आनंद ले सकता

है। वो ही जान सकता है, इसमें कितनी महक व रमणीयता है। साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि भाई सुरेश सिंधी ने अटूट संकल्प-बल के द्वारा तप का अमृत-पान किया है। तप के प्रति विशिष्ट रुचि और लगाव हो, तो ही व्यक्ति तप के पथ पर गतिमान बन सकता है। सुरेश का तप के प्रति आंतरिक लगाव है, ऐसा हमने महसूस किया है।

साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी डॉ सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी व साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने तप अनुमोदना गीत का संगान कर पूरी परिषद को तप

करने की प्रेरणा दी। तेरापंथ सभा के निर्वत्तमन अध्यक्ष विमल चिपड़ ने श्रद्धेया महाश्रमणीवरा के संदेश का वाचन किया। महेंद्र सिंधी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन सभा के संगठन मंत्री राजेंद्र भंडारी ने किया। रितू सुराणा व मुग्धा सिंधी ने गीत की प्रस्तुति दी। मुक्ता चंडालिया व शशि चंडालिया ने अपने भाव व्यक्त किए। तेरापंथी सभा द्वारा तपोभिन्नदन पत्र से तपस्वी का अभिवादन किया गया।

हमारा दायित्व - हमारा कर्तव्य कार्यशाला

पूर्वांचल-कोलकाता।

'हमारा दायित्व हमारा कर्तव्य कार्यशाला' में साध्वी स्वर्णरेखा जी अपने कर्तव्य एवं दायित्व का निर्वाह कैसे करना चाहिए, जिससे कि एक मजबूत समाज एवं राष्ट्र का निर्माण हो सके पर मंगल उद्बोधन दिया। तेयुप, पूर्वांचल के साथियों ने साध्वीश्री द्वारा रचित दायित्व बोध पर गीत का संगान किया।

कोलकाता सभा के अध्यक्ष बुधमल लुनिया, मंत्री अजय भंसाली, सॉल्ट लेक सभा के अध्यक्ष नगराज बरमेचा, मंत्री विनोद संचेत, पूर्वांचल सभा के मंत्री प्रवीण पगारिया आदि कोलकाता एवं उपनगरीय सभाओं के अध्यक्ष-मंत्री सहित तेयुप सदस्यों के साथ अभावेयुप के नरेंद्र छाजेड़ की उपस्थिति रही।

तपस्या अमृत का व्याला है

साहुकारपेट, चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में गुडियातम से समागत जयश्री गीड़िया के मासखण्डन एवं चातुर्मासकाल में एकासन के मासखण्डन करने वाले तपस्थितियों की तप अनुमोदना का कार्यक्रम तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में आयोजित हुआ। साध्वी अणिमाश्री जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वीश्री जी ने कहा कि गुडियातम से जयश्री गीड़िया मासखण्डन का तप लेकर आई हैं। तपस्या अमृत का व्याला है। किस्मत वाला ही इस व्याले को पी सकता है। जयश्री ने अपने मनोबल से, गुरु शक्ति से एवं परिवार के सहयोग से तप रूपी अमृत का पान किया हैं गुडियातम हमारा पूर्व चातुर्मासिक क्षेत्र है। हमारे चातुर्मास में छोटे क्षेत्र में भी तप की बहार आई थी। गीड़िया परिवार बड़ा परिवार है। तप के क्षेत्र में आगे बढ़ता रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

दंपति कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर, बैंगलोर।

साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में दंपति कार्यशाला का आयोजन हुआ। साध्वी प्रमिला कुमारी जी ने कहा कि परिवार एक सामाजिक प्रयोगशाला है जहाँ संयोग का प्रयोग होता है। स्त्री और पुरुष विवाह के सूत्र में बंधकर परिवार का निर्माण करते हैं, नया परिवार नई पीढ़ी को जन्म देता है परिवार का जीवन समुह का जीवन सापेक्ष का जीवन होता है। एक दूसरे का अपेक्षित सहयोग मिलने से जीवन सरस बनता है।

साध्वीश्री जी ने विश्वास, सहनशीलता, प्रमोद भावना, वाणी संयम, सकारात्मक सोच, एक-दूसरे को समान मानने और मनवाने की कला और अहंकार विसर्जन इन सूत्रों द्वारा जिंदगी के राहों को प्रशस्त बनाने के टिप्प बताए। कार्यक्रम में स्थानीय कन्या मंडल की कन्याओं ने लघु नाटिका के माध्यम से रोचक ढंग से वर्तमान परिवार के परिस्थितियों को दर्शाया, जिसके आधार पर साधुओं ने सभी दंपतियों के विचार जाने एवं उन्हें अपने जीवन में क्या-क्या परिवर्तन लाने चाहिए इस बात की जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में कुछ समय जिज्ञासा-समाधान के लिए रखा गया। सुनीता श्रीमाल ने सभी आंगन्तुकों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन साध्वीश्री जी के मंगलपाठ से हुआ। कार्यक्रम का संचालन साध्वी आस्थाश्री जी ने किया।

इस कार्यक्रम में संयोजिका थी सुनीता श्रीमाल एवं ललिता डागा। कार्यक्रम में महिला मंडल की अध्यक्षा प्रेमबाई भंसाली, मंत्री सुमित्रा बरड़िया एवं सभी पदाधिकारी उपस्थित थे।

नवरात्रि अनुष्ठान

गदग।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के सान्निध्य में नवरात्रि का अनुष्ठान संपन्न हुआ। शासनश्री साध्वीश्री जी ने कहा कि हर दिन, हर क्षण, हर समय अपने आपमें मंगल होता है। पर इन ३६५ दिनों में भी कुछ दिन विशेष माने जाते हैं उसमें नवरात्र का समय साधना की दृष्टि से, तंत्र, मंत्र की दृष्टि से अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है।

डॉ साध्वी गवेषणा जी ने कहा कि मंत्र विविध शक्तियों का खजाना है। सभी धर्मों में मंत्र जप की परंपरा रही है। प्रत्येक अक्षर मंत्र है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा—जैसे खेती की सुरक्षा के लिए बाढ़ की, चारित्र की सुरक्षा के लिए संयम की आवश्यकता है वैसे ही स्वसुरक्षा के लिए मंत्र साधना का रक्षकव्य आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुरक्षा का रक्षकवच होना चाहिए। साध्वी दक्षप्रभा जी, साध्वी मेरुप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका द्वारा अपनी भावना प्रेषित की।

♦ अपुन्नत की साधना करने वाला व्यक्ति अहिंसा और संयम को आंशिक रूप से साध सकता है। उसकी वह साधना पर्यावरण की दृष्टि से भी उपयोगी बन जाती है।

—आचार्यश्री महाश्रमण



भगवान् महावीर निर्माण कल्याणक पर विशेष

धरती के मंदार - भगवान् महावीर

□ साध्वी अणिमाश्री □

वीतरागता की अनुभूति में रमण करने वाली चेतना का नाम है—भगवान् महावीर। अध्यात्म के द्वारा अपना कायाकल्प करने वाली चेतना का नाम है—भगवान् महावीर। सुख भोग के हजारों साधनों के बीच रहकर भी त्याग के शिखर का स्पर्श करने वाली चेतना का नाम है—भगवान् महावीर। अहंकार और ममकार पर विजय प्राप्त करने के लिए स्वयं के साथ युद्ध करके परम विजेता बनने वाली चेतना का नाम है—भगवान् महावीर। दुनिया के बीच रहकर भी खुद को समझने वाली चेतना का नाम है—भगवान् महावीर। राजसी ठाठ-बाट में पलकर महलों को त्याग, आत्मोत्कर्ष की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील का नाम है—भगवान् महावीर।

विक्रम पूर्व ५४२ और ईसा पूर्व ५६६ की यह घटना है जब क्षत्रियकुङ्द ग्राम के महाराज सिद्धार्थ के राजमहल में महारानी त्रिशता की रन्तकुशि से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की मध्यरात्रि में एक शिशु ने जन्म लिया। पुत्ररत्न की प्राप्ति की खुशी में जन्मोत्सव करने के बाद राजा सिद्धार्थ ने नामकरण उत्सव में अपने सगे-संबंधियों के बीच अनाम शिशु को वर्ज्ञमान नाम से पुकारा। यही बालक वर्ज्ञमान आगे चलकर भगवान् महावीर के नाम से स्वनाम धन्य बना।

ज्ञातखंड उद्यान में वैशाली के हजारों-हजारों लोगों के समक्ष गृह त्याग की धोषणा के साथ ही सन्न्यास के महापथ पर चरण गतिमान कर दिए। महावीर ने संन्यस्त होते ही संकल्प किया—मेरी स्वतंत्रता में बाधा डालने वाली जो भी

परिस्थितियाँ आएँगी मैं उनका सामना करूँगा। मगर कभी उनके सामने झुकूँगा नहीं। देह त्याग कर सकता हूँ पर परतंत्रता मान्य नहीं। साधना के क्षेत्र में पुरुषार्थ का प्रचंड दीप प्रदीप्त करके, अनगिन बाधाओं को साहस और आत्मविश्वास के साथ सहजता से पार करके लगभग के साथ बारह वर्षों तक निरंतर आत्मसाधना में तल्लीन रहकर जंभियग्राम के निकट बहने वाली ऋजुवालिका नदी के उत्तरी तट पर स्थित जीर्ण चैत्र के ईशान कोण में शयामाक गाथापति के खेत में शाल वृक्ष के तले गोदोहिका आसन्न में वैशाख शुक्ला दशमी को केवल ज्ञान को प्राप्त किया। भगवान् महावीर सर्वज्ञ, सर्वदर्शी बन गए। वैशाख शुक्ला एकादशी को मध्यपावा के महासेन उद्यान में विराजित होकर प्राणिमात्र के कल्याण की स्वतः स्फूर्त प्रेरणा अभिप्रेरित होकर प्रवचन प्रारंभ किया। ग्यारह विद्वान् पंडित अपने ४४०० शिष्यों के साथ सोमिल की यज्ञ वाटिका में उपस्थित थे। उन्होंने जब भगवान् महावीर के समवसरण में प्रवचन की चर्चा सुनी तब अपनी गूढ़ जिज्ञासा का समाधान लेने एवं उस प्रभावशाली व्यक्तित्व में दर्शनों की ललक के साथ उस पुनीत सन्निधि में पहुँचे और उनसे दीक्षा स्वीकार करके उनके चरणों में जीवन समर्पित कर धन्य-धन्य बन गए।

भगवान् महावीर ने लगभग तीस वर्ष तक सर्वज्ञ बनकर इस धरती को संबोधित किया। केवल ज्ञान के आलोक में अनेक भव्यात्माओं को रास्ता दिखाया। मंजिल पाने की प्रेरणा दी एवं गंतव्य तक

पहुँचने का साहस जगाया। भगवान् महावीर ने तत्कालीन समाज में प्रचलित अनेक कुरुदियों को जड़ से मिटाने का प्रयत्न करके सफलता का वरण किया। अपने जीवनकाल के बहतरवें वर्ष में राजगृह से विहारकर अपापापुरी में आए। राजा हस्तिपाल की गजशाला में चातुर्मुखिक प्रवास किया। वहाँ के राजा एवं जनता ने धर्म-तत्त्व का निरंतर श्रवण किया। अपना निर्माण समीप जान गौतम को कहा—गौतम! निकट के गाँव में सोम शर्मा नामक ब्राह्मण को धर्म का तत्त्व समझाना है। तुम जहाँ जाकर उसे संबोध दो। भगवान् की आज्ञा शिरोधार्य कर गौतम वहाँ से चले गए।

दो दिन के उपवास में निरंतर प्रवचन करते हुए अंत में प्रवचन करते-करते ही भगवान् महावीर ने निर्वाण को प्राप्त कर लिया। यह समय कार्तिक अमावस्या की रात्रि का था। ईसा पूर्व ५२७ में निर्वाण प्राप्त किया। भगवान् महावीर निर्वाण प्राप्ति के समय मल्ली और लिच्छवी गणराज्यों में दीप जलाए। असंख्य लोगों के अंतःकरण को प्रकाशित करने वाले रश्मिपुंज भगवान् महावीर के निर्वाण दिवस पर आज भी उनके भक्तजन दीप जलाते हैं। तप-जप करते हुए भगवान् महावीर का निर्वाण दिवस मनाते हैं। जिन शासन के शृंगार, धरती के मंदार, चरम तीर्थपति भगवान् महावीर का यह निर्वाण कल्याणक संपूर्ण जैन समाज बड़े आनंद और उल्लास के साथ सदियों से मना रहा है। अस्तु आज का यह दिन हम सबके लिए समूची मानव जाति के लिए कल्याणकारी हो।

रक्तदान शिविर

भीलवाड़ा।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप भीलवाड़ा द्वारा परिषद के युवा कार्यकर्ता विक्रम पितलिया के आकस्मिक निधन पर उनकी पुण्य स्मृति में तेरापंथ नगर के महाश्रमण सभागार में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें १०३ रक्त यूनिट एकत्रित किया गया।

संस्था के मंत्री पीयूष रांका ने बताया कि परिषद के युवा साथी स्व० विक्रम पितलिया की पुण्य स्मृति में आयोजित इस रक्तदान शिविर का शुभारंभ प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया, महामंत्री निर्मल गोखरा, सभा अध्यक्ष भैरुलाल चोराडिया, तेयुप अध्यक्ष संदीप चोराडिया, महिला मंडल अध्यक्ष मीना बाबेल, टीपीएफ अध्यक्ष राकेश सुतरिया एवं निवर्तमान अध्यक्ष सुनील बनवट, अभातेयुप सदस्य मीडिया सलाहकार अंकुर बोरादिया, अभातेयुप सदस्य कुलदीप मारु द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। शिविर प्रभारी दीपक सिंधवी ने कार्यक्रम का विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीण एवं अन्य सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

रक्तदान शिविर का आयोजन

अहमदाबाद।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा नारोल क्षेत्र में भेरु फोलिंग पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में १०६ यूनिट ब्लड प्राप्त हुआ। स्व० खुशी पारीक की प्रथम पुण्यतिथि पर रक्तदान कैप में किशन पारीक ने व्यवस्था की। १०६ रक्तदाताओं ने अपना रक्त दान कर प्रथम पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

कैप को सफल बनाने में अभातेयुप सदस्य राजेश चोपड़ा, परिषद के ब्लड कैप सलाहकार प्रकाश बैद, कोषाध्यक्ष दिलीप भंसाली का विशेष श्रम रहा। परिषद अध्यक्ष ललित बेगवानी, उपाध्यक्ष-द्वितीय पंकज धीया, मंत्री कपिल गोखरा, पूर्व सहमंत्री सागर सालेचा, कार्यसमिति सदस्य मनोज सिंधी, कांति दुगड़ एवं तेयुप सदस्य रवि बालड़ ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

प्रांत स्तरीय श्रावक-श्राविका सम्मेलन-२०२१ 'प्रेरणा'

उड़ीसा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में उड़ीसा प्रांतीय तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में उड़ीसा प्रांतीय श्रावक-श्राविका सम्मेलन-२०२१ का आयोजन तेरापंथ भवन केसिंगा में आयोजित किया गया। कन्या मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण गीत की प्रस्तुति दी। स्वागत भाषण उड़ीसा प्रांतीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मुकेश कुमार जैन ने अपना स्वागत भाषण प्रदान करते हुए सभी महानुभावों का स्वागत-अभिनंदन किया।

स्थानीय सभा अध्यक्ष मंगतराम जैन ने स्थानीय सभा की ओर से सभी महानुभावों का स्वागत किया। अतिथियों के परिचय के क्रम में छत्रपाल जैन ने सभी आगंतुक अतिथियों का परिचय प्रदान किया। विनोद बरलोटा कार्यसमिति सदस्य महासभा ने अपने विचार गीतिका के माध्यम से व्यक्त किए। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीतिका प्रस्तुत की। किशनलाल डागलिया ने अपने विचार व्यक्त किए। मुनि जिनेश कुमार जी ने अपने उद्बोधन में प्रेरणा प्रदान की। ओडिशा प्रांतीय तेरापंथी सभा के महामंत्री अनूप कुमार जैन ने सभी का आभार ज्ञापन किया। मंच का संचालन मुनि परमानंद जी एवं अनुप कुमार जैन ने किया।

♦ इस दुनिया में कोई स्थायी नहीं, सब राही हैं।

—आचार्य श्री महाश्रमण

जैन स्कॉलर कार्यशाला

लाडनूँ।

अभातेयमं के निर्देशन में आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत जैन स्कॉलर कार्यशाला के तृतीय बैच के चतुर्थ सत्र का समापन हुआ। जैन स्कॉलर निर्देशिका डॉ० मंजु नाहटा (कोलकाता) एवं सह-निर्देशिका कनक बरमेचा (सूरत) तथा चार प्रशिक्षिकाओं के निर्देशन में यह कार्यशाला रोहिणी-लाडनूँ में संपन्न हुई। जैन स्कॉलर्स के माध्यम से जैन विद्वान् तैयार किए जाते हैं। इसके अंतर्गत—देव-भाषा संस्कृत पढ़ाई जाती है। आगम-भाषा प्राकृत का ज्ञान कराया जाता है। जैन-विद्वान् तैयार करने की दृष्टि से दर्शन का गहन अध्ययन कराया जाता है। कर्म ग्रंथ का सूक्ष्म दृष्टि से गहरा अध्ययन कराया जाता है।

सभी प्रशिक्षकों द्वारा जैन दर्शन का गहराई से प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यशाला में कुल २७ परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। इसमें २५ विद्यार्थियों ने लाडनूँ में एवं दो विद्यार्थियों ने क्रमशः बैंकॉक व दुबई से जूम के माध्यम से परीक्षा दी। मुनि अमृत कुमार जी स्वामी के मंगलपाठ से परीक्षा का शुभारंभ हुआ। कार्यशाला की सफलता में संयोजिका विजय लक्ष्मी भूरा का महत्वपूर्ण योगदान रहा। कार्यशाला मदन-प्रकाश देवी, महेंद्र कांता देवी तातेड़ (धानी) मुंबई के सौजन्य से संपादित की जाती है।



व्यक्ति को अहिंसा, संयम और तप के पथ पर गतिमान रहना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २६ अक्टूबर, २०२१

प्रातः स्मरणीय आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः भिक्षु विहार से विहार कर महाश्रमण सभागार पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेर प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि मैं मार्ग में आ रहा था तो साध्वीप्रमुखाश्री जी के शब्द मेरे कर्ण में पड़े। साध्वीप्रमुखाजी मुझे कोट करके अहिंसा, संयम तप की बात बता रही थीं, तो मैं उसी बात को कुछ व्याख्यात कर रहा हूँ।

अहिंसा एक ऐसा तत्त्व है, जो बड़ा शांति देने वाला है। सुख देने वाला है। दुःख हिंसा को प्रसूत होते हैं। सुख है, वो अहिंसा से पैदा होते हैं। अहिंसा-समता है, तो सुख पैदा हो जाता है। अणुवत्र में भी अहिंसा की बात है। आचार्यश्री महाप्रज्ञा जी ने अहिंसा यात्रा की थी उसमें भी अहिंसक चेतना का जागरण, नैतिक मूल्यों का विकास, ये बातें थीं।

जैन-अजैन, आस्तिक-नास्तिक, नारकीय जीव, देव, मनुष्य या तिर्यच थे, जो भी अहिंसा के पथ पर चलेगा, वो सुख को प्राप्त हो सकेगा। अहिंसा सबके लिए कल्याणकारी है। अहिंसा भगवती होती है।

अहिंसा को जीवन दाता कहा गया है। सम्भाव रूपी अमृत का सींचन अहिंसा से प्राप्त हो सकता है। अहिंसा के पथ पर हमें चलने का प्रयास करना चाहिए।

दूसरी बात है—संयम। जीवन में जितना संयम हो। वाणी का, सोचने का, शरीर से कार्य का संयम हो। अशुभ से निवृत्ति हो। ऐसा संयम हो जाए तो अच्छी संयम की साधना हो सकती है। ज्ञानेंद्रियों और कर्मेन्द्रियों का भी संयम हो।

तीसरी बात है—तप। जितना तप हो सके। आदमी उपवास, पोरसी, नवरात्रि आदि तप करे। स्वाध्याय भी आध्यात्मिक तप है। तप एक तेज है। तेजोलेश्य की प्राप्ति भी विधिवत तपस्या की साधना से हो सकती है। किसी को मारने के लिए अपनी तेजस्विता या शक्ति का प्रयोग न हो। किसी के कल्याण में अपने तेज का प्रयोग करना बढ़िया बात है। हम अहिंसा, संयम और तप के पथ पर चलें।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि मनुष्य चिंतनशील प्राणी है। वह जानता है, सोचता है, समझता है कि यह संसार अशुद्ध है, अशाश्वत है, अनित्य है। और



दुःख बहुत है। जन्म, बचपन, यौवन और बुद्धापा दुःखमय है। ऐसे संसार में जीता हुआ व्यक्ति ऐसा कौन सा कर्म करे, किस रास्ते पर चले, जिससे अगले जन्म में उसका दुर्गति से बचाव हो सके।

भगवान महावीर ने अनेक उपाय बताए हैं, जिससे आदमी अच्छा जीवन जी सकता है। जन्म व्यक्ति का कल होता है, यह उसके हाथ की बात नहीं है, पर जीवन कैसा जीता है, यह उसके हाथ की बात हो सकती है। जीवन के बारे में भिन्न-भिन्न दार्शनिकों के भिन्न-भिन्न मतत्व हैं। एक मत है—पाँचभूतों का समवाय है—यह जीवन। कुछ शरीर श्वास, इंद्रिय, मन, प्राण, भाव अच्छे हो तो चेतना को निरावरण की बात सोची जा सकती है।

मनुष्य का जीवन सबसे श्रेष्ठ है। कारण वह लक्ष्य का निर्धारण कर शांतिमय जीवन जीया जा सकता है। अपनी परिधि में रहकर लक्ष्य को साधने का प्रयास करें। अति कल्पना से बचें। राजपथ न बन सके तो पगड़ंडी बनकर चले। दूसरों का बुरा न करें। विधायक भाव में जीने वाला आनंद में जीता है। आनंद अपने अंदर ही है। आदमी की जीवनशैली अच्छी हो। इस जीवन का मूल्यांकन करे। यह एक प्रसंग से समझाया।

यह हर व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह जीवन को किस रूप में देखता है, उसकी कितनी कीमत आँकता है। जीवनशैली अलग-अलग हो सकती है। व्यक्ति सोचे—मैं कौन हूँ, मैं अपने बारे में दूसरों की धारणा देखता रहूँगा या

महाश्रमण सभागार

जीवनशैली कैसी होनी चाहिए? जीना है।

गणाधिपति गुरुदेव तुलसी ने एक जैन लोगों का दायित्व है कि वे अपने बारे में सोचें। एक जैन श्रावक की ने जैन श्रावक के बारह व्रत बताए हैं।

जैन जीवनशैली के नौ आयाम हैं। अहिंसा, संयम और तप एक धार्मिक त्रिपदी है। इसको समझकर जीवन में उतारने का प्रयास करें।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि आदमी के जीवन में धर्म के प्रति अनुरक्षित रहे। प्रायश्चित देने वाले व्यक्ति के मन में धर्म के प्रति आस्था होती है। धर्म के कारण ही हमारी सुरक्षा है। धर्म करने का उद्देश्य है कि हमारी कर्म निर्जरा हो रही है, आत्मा का शोधन हो रहा है। विनप्रता एक ऐसा शस्त्र है, जिसके द्वारा व्यक्ति को मारा नहीं जाता, व्यक्ति के मन को उस शस्त्र से पिघल दिया जाता है। विनय से व्यक्ति अपने कर्म को काटकर हल्का बन सकता है।

साध्वी कांत्यशा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। साध्वी मृदुलाकुमारी जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। साध्वी विमलप्रज्ञा जी ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी।

भवसागर को पार करने के लिए...

(पृष्ठ १२ का शेष)

इसलिए हमारे जीवन में और मूल अनंतकाल में सम्यक् ज्ञान का होना बहुत आवश्यक है, महत्वपूर्ण है। सम्यक् दृष्टिकोण या सम्यक् ज्ञान नहीं है तो उस अवस्था में मोक्ष मिल ही नहीं सकता। मिथ्यात्वी है कुछ अच्छा आचरण करता है, तो कुछ अंशों में धर्म निर्जरा का लाभ मिल जाए पर संवर्धन की आराधना से वह वंचित रहता है। प्रथम चार गुण स्थानों में संवर्धन नहीं होता है। पर निर्जरा धर्म हो सकता है।

मिथ्यात्वी बाल तपस्वी है, उसकी भी कर्म निर्जरा हो सकती है। ऐसा मिथ्यात्वी जो अभव्य है, कभी मोक्ष जा ही नहीं सकता, वह भी इतना पुण्योपार्जन कर लेता है कि नव-ग्रैवेयक तक का आयुष्य बंधन वो कर सकता है।

चलाने वाला व्यक्ति चक्षुष्मान हो, नींद में न हो, नशे में न हो, जागरूक हो तो वहाँ पार पहुँच सकता है। नैत्रीवर्ग अच्छा हो तो समाज या राष्ट्र को आगे बढ़ा सकता है? सम्यक्त्व के बिना भले चारित्र आ जाएँ काज नहीं सरता है। सम्यक्त्व है, तो अच्छी साधना करें, सहन करें तो सवाया लाभ हो सकता है।

अज्ञानता एक प्रकार की अंधता होती है। प्रवचन श्रवण या साहित्य पढ़ने से अज्ञानता दूर हो सकती है। अज्ञान के अंधकार से अच्छे बने हुए लोग हैं, उनको ज्ञान की अंजन श्लाका से भीतर के नैत्र को खोल देते हैं, ऐसे गुरु को नमस्कार है। गुरु का इसलिए महत्व है कि वो अंधकार को दूर करने का काम करते हैं।

गुरु का एक अर्थ है—बड़ा, भारी। दूसरा अर्थ है—गु का अर्थ है—अंधकार। रु का अर्थ है—उसको दूर करने वाला। गुरु त्यागी और संयमी भी हो तो अच्छा पथ-दर्शन मिल सकता है। ऐसे गुरु से सम्यक्-ज्ञान और सम्यक् दिशा निर्देश मिल सकता है।

सम्यक् ज्ञान सम्यक् चारित्र को बढ़ाने वाला बन सकता है। हम अपने जीवन में सम्यक् ज्ञान बढ़ाने का प्रयास करें, यह काम्य है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि साधु अठारह पाप से बचते हुए भिक्षु प्रतिमा की आराधना करता है, यह एक प्रकार का विनय है। आगमों में कहा गया है कि विनीत कौन? विनीत वह होता है, जो गुरु दृष्टि की आराधना करता है।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि तीव्र कथाय वाले व्यक्ति अपनी प्रशंसा, आत्मश्लाघा ज्यादा करते हैं। कुछ व्यक्ति अपनी प्रशंसा बोलकर करते हैं, तो कुछ व्यक्ति अपने आचरण से करते हैं। आत्म-श्लाघा निकृष्ट कार्य है।

गुजरात सरकार के संगठन मंत्री रत्नाकर पूज्यप्रवर की सन्निधि में दर्शनार्थ पधारे। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि राजनीति एक सेवा का माध्यम है। राजनीति में नैतिक मूल्य अच्छे बने रहें।

रत्नाकर जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। प्रवास व्यवस्था समिति द्वारा उनका सम्मान किया गया।

जैविभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक आत्म विश्लेषण के सौलह सूत्र जो मुनि स्वस्तिक कुमार जी की कृति है, पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में जैविभा के पदाधिकारियों द्वारा लोकार्पित की गई। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि यह पुस्तक है। आत्म-विश्लेषण तो अच्छी चीज है, स्वयं की तटस्थ अनुग्रेश्य करें। पाठकों हेतु अच्छी उपयोगी बने, ऐसी मंगलकामना।

साध्वी अखिल भारतीय जी ने अपनी प्रस्तुति दी। भीलवाड़ा महिला मंडल द्वारा प्रस्तुति हुई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



अपनी आत्मा को जीतने वाला परम विजयी होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

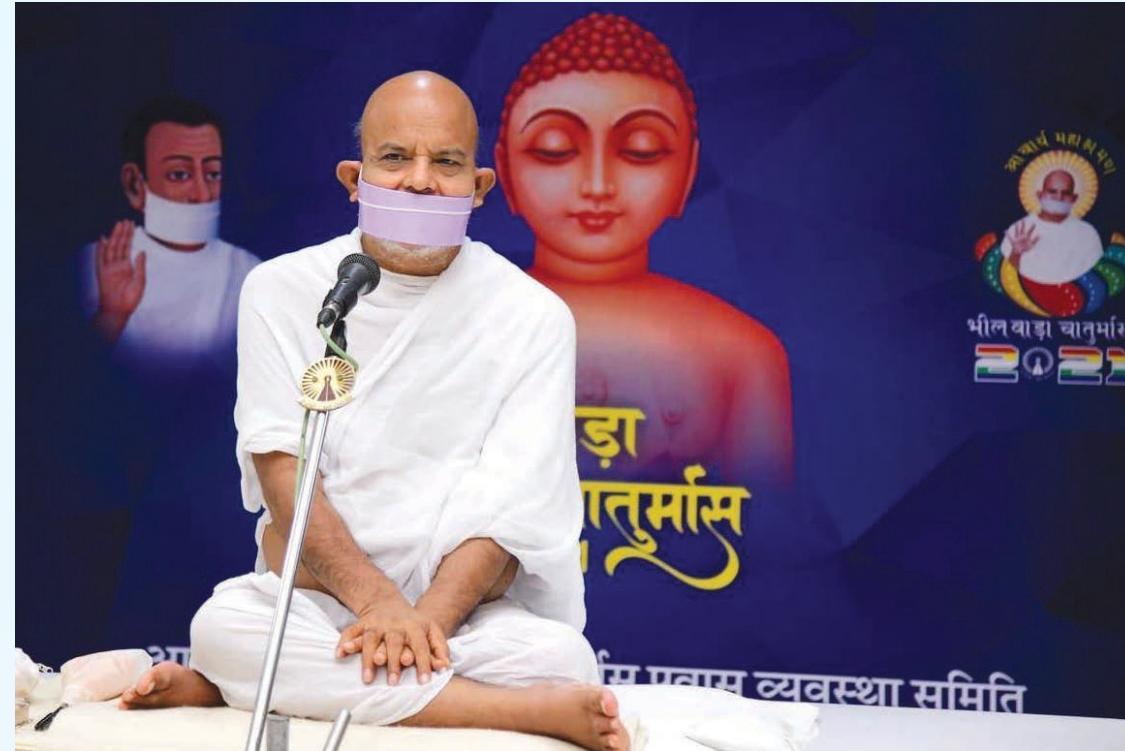
भीलवाड़ा, २५ अक्टूबर, २०२१

तेरापंथ धर्मसंघ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में हार और जीत का प्रसंग भी आता है। चुनाव में भी एक तरह का लड़ना होता है, संघर्ष होता है। कोई उम्मीदवार हार जाता है, कोई जीत जाता है। न्यायालय में भी वादी-प्रतिवादी होते हैं। शास्त्रार्थ होता है, वहाँ भी हार-जीत हो सकती है।

युद्ध में भी हार-जीत की बात हो जाती है। शास्त्रकार ने एक बात बताई है कि परम जय किसकी होती है? एक योद्धा समरांगण में लड़ता है और वह दस लाख शत्रुओं को जीत लेता है। दुर्जय संग्राम में भी शत्रुओं को जीत लेता है। दूसरा साधक आदमी जो केवल अपनी एक आत्मा को जीतता है। कहाँ दस लाख शत्रुओं को जीतने वाला योद्धा, कहाँ एक अपनी आत्मा को जीतने वाला साधक। पर दोनों में परम जय उसकी है, जो अपनी एक आत्मा को जीत लेता है। दस लाख शत्रुओं को जीतने वाले की जय हो सकती है।

यह धर्म-युद्ध है। भीतर का युद्ध है। अपने शत्रु, जो चार कषाय हैं, उनको जीतना। पाँच इंद्रियों को भी जीतने की अपेक्षा होती है। मन को भी जीतने की अपेक्षा होती है। इन दस को जो जीत लेता है, उसने अपनी आत्मा को जीत लिया। अपनी आत्मा को जीत लिया तो वह उसकी परम जय हो जाती है।

इस संदर्भ में दूसरों को जीतना आसान है, स्वयं के द्वारा स्वयं को जीतना कठिन होता है। साधक को भी एक तरह का सैनिक बनना पड़ता है। संक्षेप में एक मोहनीय कर्म को जीत लिया, अपनी आत्मा को लगभग जीत लिया। बाकी सात कर्मों को जीतने के लिए संभवतः ज्यादा



प्रयास करने की अपेक्षा नहीं रहती।

आठ कर्मों में ज्यादा नुकसान करने वाला मोहनीय कर्म है। पाप कर्म का मुख्य जिम्मेवार मोहनीय कर्म है। बाकि तो उसके परिवार के सदस्य हैं। मोहनीय कर्म नहीं तो और पाप लगेंगे ही नहीं। मुख्यतया आत्मा का शत्रु यह मोहनीय कर्म होता है। शेष धारी कर्म थोड़ा नुकसान करने वाले हैं। चार अधारी कर्म आत्मा का नुकसान करने वाले नहीं होते हैं।

चार कषाय मोहनीय कर्म के परिवार के ही सदस्य हैं। ये चारों कषाय खत्म तो मोहनीय कर्म भी खत्म हो जाता है। साधक का युद्ध-एक तरफ मोहनीय कर्म का उदय, दूसरी ओर मोहनीय कर्म का क्षयोपशम औदयिक और क्षयोपशमिक भावों के बीच मानो युद्ध चलता है। कभी मोहनीय का उदय विजेता तो कभी मोहनीय का क्षयोपशम विजेता बन जाता है। युद्ध करते-करते मोहनीय कर्म

संपूर्णतया क्षय होता है, आत्मा मोहनीय कर्म से मुक्त हो जाती है।

मोहनीय कर्म आत्मा को छोड़े, तब हमें पूर्ण स्वातंत्र्य प्राप्त हो सकेगा। मोहनीय कर्म अनादिकाल से आत्मा में जमा हुआ है। इससे आत्मा का मकान खाली कराना है, तो भारी या उचित प्रयास करना होगा। भगवान महावीर ने एक ही जन्म में मोहनीय कर्म को परास्त नहीं किया। कितने जन्मों तक प्रयास किया होगा। तभी प्रयास करते-करते उनको महावीर के भव में स्वातंत्र्य प्राप्त हुआ।

कहीं चोट भी करनी होती है। शास्त्रकार ने कहा है कि युद्ध में साधन-सामग्री क्या है? गुरसे को जीतने का हथियार है—उपशम की साधना करो। मान को जीतने के लिए मार्दव की साधना, माया को जीतने के लिए आर्जव का अभ्यास और लोभ को जीतने के लिए संतोष की साधना करो। प्रयास

करते-करते कुछ सफलता मिल सकती है।

साधना करने से पूर्ण सफलता तो न भी मिले पर नीचे की गति में तो नहीं जाना पड़ेगा। उच्च गति को जीव प्राप्त कर सकता है। प्रयास करते-करते पूर्ण



भ्रवसागर को पार करने के लिए सम्यक् ज्ञान एवं सम्यक् दृष्टि आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ३० अक्टूबर, २०२१

तीर्थकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि सूयगाड़ो आगम में शास्त्रकार ने बताया है कि कोई मिथ्या दृष्टिकोण वाला अनार्थ भले वह श्रमण के रूप में ही संसार से पार पाना चाहता है वह जब तक मिथ्या दृष्टि में रहेगा प्राप्त नहीं कर सकेगा।

इसका शास्त्रकार ने उदाहरण दिया है कि एक जन्मान्ध व्यक्ति है, वह किसी नौका में बैठकर नौका को चला करके पार पाने का इच्छुक है, उसका पार पा जाना असंभव या मुश्किल है। वह बीच में ही कहीं ढूब सकता है, क्योंकि वह जन्मान्ध आदमी न तो नौका के मुख-अग्र भाग को जानता है, न उसके पृष्ठ भाग को देख पा रहा है, न वह नाव खेने के उपकरणों का उपयोग जानता है, ऐसा जात्यन्ध व्यक्ति नौका चलाने में असमर्थ हो सकता है। अगर वह छेद वाली नौका में बैठ जाए तो अवश्य ही ढूबने वाला है।

ऐसी नौका जिसकी चारदिवारी नहीं की गई है, उसका कोष्ठ भंग हो गया है, उसे आश्राविणी नौका कहते हैं। जन्मान्ध व्यक्ति आश्राविणी नौका में बैठ गया है, तो वह ढूबने वाली नौका है। इसी तरह मिथ्या दृष्टिकोण व्यक्ति जन्मान्ध की तरह होता है। साधु का वेश वह जन्मान्ध व्यक्ति बना भी ले तो भी छिद्र वाली या आश्राविणी नौका में बैठने से ढूबने वाला ही है, उसका कल्पण होने वाला नहीं है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

